THE BOOK WAS DRENCHED

UNIVERSAL LIBRARY
OU_180765
UNIVERSAL LIBRARY

OUP—552—7-7-66—10,000

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H81.6/J61D Accession No. G.H. 2800

Author जिज्ञासु, रवलाल.

Title धरती के देवता. 1962.

This book should be returned on or before the date last marked below.

अल्पमोली संस्करण

धरती के देवता

खलील जिब्रान की भावपूर्ण रचनाओं का हिन्दी-रूपान्तर

रूपान्तरकार

माईदयाल जैन

पुस्तक भेंट के निमित्त है

सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली
१९६२

प्रकाशक
मार्तण्ड उपाध्याय,
मंत्री, सस्ता साहित्य मण्डल,
नई दिल्ली

अल्पमोली संस्करण :
पहली बार : १९६२
मूल्य : एक रुपया

मुद्रक :
हीरा आर्ट प्रेस,
दिल्ली

प्रकाशकीय

खलील जिब्रान से हिन्दी के पाठक भली-भांति परिचित हैं। उनकी अनेक रचनाओं के हिन्दी में अनुवाद हुए हैं, जिन्हें पाठकों ने बहुत पसंद किया है। जीवन-संदेश, पागल, बटोही आदि उनकी ऐसी कृतियां हैं, जो कभी पुरानी नहीं होंगी। उन्हें जब भी पढ़ा जायगा, नई ताजगी मालूम होगी।

प्रस्तुत पुस्तक में उनकी दो पुस्तकों का अनुवाद दिया गया है। 'धरती के देवता' उनकी सुविख्यात पुस्तक 'दी अर्थ गॉड्स' का रूपान्तर है और 'गद्य-गीत' उनकी 'प्रोज़ पोइम्स' का। 'धरती के देवता' जिब्रान की अंतिम रचना है, जो उनकी मृत्यु के दो सप्ताह पूर्व प्रकाशित हुई थी। भावों की गहनता के साथ-साथ इसमें हृदय की इतनी स्पन्दनशीलता है कि पाठक पढते-पढ़ते इसमें डूब जाते हैं।

दूसरी पुस्तक 'गद्य-गीत' तो मानों भावों का सागर है। उसकी प्रत्येक रचना मानव के अंतर के संगीत और लय का अलौकिक सौन्दर्य है। उसे पढ़कर पाठकों को ऐसा लगता है, मानों इन रचनाओं में उन्हीका हृदय बोल रहा हो। बार-बार पढ़ने पर भी तृप्ति नहीं होती।

दोनों ही कृतियां भावनाओं की तीव्रता और शैली के चमत्कार के अद्वितीय नमूने हैं।

हम आशा करते हैं कि यह मर्मस्पर्शी तथा विचारोत्तेजक पुस्तक हिन्दी-जगत में बड़े चाव से पढ़ी जायगी और विश्व के महान कलाकार जिब्रान के प्रति पाठकों की रुचि को और अधिक समर्थ एवं समृद्ध करेगी।

—मंत्री

विषय-सूची

१. **धरती के देवता** ५-४३

२. **गद्य-गीत** ४३-१००

१. मन्दिर के द्वार पर ४५

२. दैवी वाणी ५२

३. आत्मा ५५

४. रात का गीत ५७

५. मेरी आत्मा ने मुझसे कहा ५८

६. मेरा जन्म-दिन ६४

७. मेरे हृदय, चुप रह ७५

८. रात ८४

९. क़ब्रिस्तान में ९०

१०. कवि ९४

११. ख्याति ९९

१२. मिट्टी १००

: १ :

धरती के देवता

जब सृष्टि की रचना के बारहवें युग की रात हुई और रात की ख़ामोशी की लहरों ने पहाड़ियों को आवृत्त कर लिया तो धरती के तीन देवता, जो जीवन के रक्षक हैं, पर्वतों पर प्रकट हुए।

नदियां उनके पैरों में खेलने लगीं,
कुहर उनके वक्षों पर छा गया
और उनके सिर बड़ी शान से इस संसार में ऊंचे उठे।

फिर वे आपस में बातें करने लगे।
उनकी आवाज़ें दूरस्थ गरज के समान थीं,
जो मैदानों में चारों ओर गूंजने लगीं।

पहला देवता

वायु पूर्व की ओर चल रही है,
मैं अपना मुंह दक्षिण की ओर मोड़ लूंगा,
क्योंकि वायु ने मेरी नाक को मुर्दों की दुर्गंध से भर दिया है।

दूसरा देवता

यह भुने हुए मांस की मधुर और आनंददायक महक है।
मैं तो इसका अवश्य आनंद लूंगा।

पहला देवता

यह तो अपनी लपटों में धीरे-धीरे जलती हुई मौत की दुर्गंध है,
वायु इसके बोझ से दबी जा रही है।
गढ़ों की गंदी सांस के समान यह मेरी इन्द्रियों को असह्य हो रही है।
मैं अपना मुंह गंधहीन उत्तर[1] की ओर फेर लूंगा।

दूसरा देवता

ध्यान-मग्न जीवन के जलने की मीठी-मीठी सुगंध है यह,
मैं इसे केवल अब एक बार ही नहीं, बार-बार सूंघूंगा।
देवताओं का निर्वाह बलि पर होता है,
उनकी प्यास रक्त से ही बुझती है,
उनके हृदय बाल-आत्माओं की बलि से ही संतुष्ट होते हैं,
उनकी नसों और पट्ठों को मौत के साथ खेलनेवालों की अमर सांसों से बल प्राप्त होता है,
और उनके सिंहासन मानव-संतान की मिट्टी पर बने हुए हैं।

पहला देवता

मेरी आत्मा तो इन सबसे तंग आ गई है।
अब मैं अपना हाथ सृष्टि-रचना के लिए नहीं उठाऊंगा,
न इसका नाश करने के लिए ही।

---

[1] भारत के समान लबनान में भी हवा पूर्व और पश्चिम से चलती है, उत्तर से नही।—अनु०

यदि मर सकना मेरे बस में होता,
तो मैं जीना कभी पसन्द न करता,
क्योंकि युगों का बोझ मेरे कंधों पर है
और समुद्रों के निरंतर विलाप ने मेरी नींद हर ली है ।
काश ! मैं अपने असली उद्देश्य को भूल जाता
और अस्त सूर्य के समान गायब हो जाता ।
काश ! मैं अपने देवत्व को इसके उद्देश्यों से मुक्ति दिला सकता
और अपनी अमरता को अंतरिक्ष में फैला सकता,
और सदा के लिए लोप हो जाता ।
काश ! मैं विनाशकारी आग में जलकर काल की स्मृति से सदा के लिए मिट जाता

और मेरा अस्तित्व अनस्तित्व के शून्य में छिप जाता !

तीसरा देवता

सुनो, मेरे भाइयो,
मेरे पुराने साथियो, सुनो,
एक नवयुवक सामनेवाली घाटी में अपने हृदय का गीत रात को सुना रहा है ।
उसका सितार सोने के तारों और आबनूस की लकड़ी से बना है ।
उसका स्वर सोने और चांदी के सिक्कों की भांति खन-खनाता है ।

दूसरा देवता

मैं इतना अभिमानी नहीं कि मरने की इच्छा करूं।
मैं तो कठिन-से-कठिन मार्ग चुनूंगा,
मैं ऋतुओं का अनुकरण करूंगा और काल के गौरव को बढ़ाऊंगा।
मैं धरती में बीज बोऊंगा और उन्हें उसकी छाती को चीर-कर फूटते हुए देखूंगा।

मैं फूल को उसके गुप्त स्थान से पुकारूंगा
और उसे वह शक्ति प्रदान करूंगा, जिससे वह मस्ती से भर-कर जीवन की टहनी पर लहलहाये
और जब तूफान जंगलों में अट्टहास करेगा, तब मैं उसे तोड़ लूंगा।
मैं इन्सान को उसके गुप्त अंधकार से बाहर निकालूंगा,
पर उसका संबंध धरती से बनाये रखूंगा।

मैं उसके हृदय में जीवन के लिए तड़प पैदा करूंगा और मौत को उसका प्याला लेकर साथ चलनेवाला बनाऊंगा।
मैं उसे वह प्रेमदान करूंगा, जो दर्द के साथ-साथ बढ़ता है,
जो इच्छाओं के साथ उभरता है, उमंगों के साथ फैलता है और आलिंगन के साथ मंद होने लगाता है।
मैं उसकी रातों को आनेवाले दिनों के मधुर स्वप्नों से सजाऊंगा
और उसके दिनों में सुहावनी रातों की सुन्दर कल्पनाओं से जान डालूंगा।

और फिर भी उसके दिनों और रातों में एक अचल समानता बनाये रक्खूंगा,

मैं यद्यपि उसकी कल्पना को बाज़ की उड़ान प्रदान करूंगा
और उसके विचारों को समुद्रों के तूफानों की गति दूंगा,
तो भी उसको ऐसे हाथ दूंगा, जो निर्णय करने में जल्दी न करें,
और पांव ऐसे दूंगा, जो सोच-सोचकर आगे बढ़ें।
मैं उसे इतनी प्रसन्नता दूंगा कि वह आनन्द के मारे हमारे सामने गाने लगे,
और उसे इतनी व्यथा दूंगा कि वह हमें पुकारने लगे।
और जब धरती भूख के मारे भोजन के लिए चिल्लायगी,
तब मैं उसे धरती की तली में सुला दूंगा।
मैं उसकी आत्मा को ऊर्ध्वलोक में ले जाऊंगा,
जिससे वह हमारे भविष्य के सुखों का स्वाद ले सके।
मैं उसके शरीर को कीचड़ में ही पड़ा रहने दूंगा,
जिससे वह अपने अतीत को न भूलने पाये।

इस तरह हम इन्सान पर अंतिम क्षण तक राज करते रहेंगे,
हम उसकी उन सांसों पर काबू रक्खेंगे, जो कि उसकी मां की पीड़ा और चिल्लाने से आरम्भ हुई हैं
और जो उसके बच्चों के विलाप के साथ समाप्त होंगी।

पहला देवता

मैं प्यासा हूं, पर मैं एक दुर्बल जाति के पतले लहू का पान नहीं करूंगा,

क्योंकि यह प्याला कलुषित है और जो अंगूरी शराब इसमें है, वह मुझे कड़वी मालूम होती है ।
मैंने तुम्हारी तरह मिट्टी को गूंधा और उससे सांस लेनेवाले वे प्राणी बनाये,
जो मेरी गीली अंगुलियों से फिसलकर दलदलों और पर्वतों में बिखर गये ।
तेरे ही समान मैंने प्रथम जीवन की अंधेरी गहराइयों को प्रकाशित किया है,
और उसे गुफाओं से रेंग-रेंगकर पर्वतों पर चढ़ते देखा है ।
मैंने तुम्हारी तरह वसंत ऋतु को बुलाया और उसके सौन्दर्य और रंगीनियों का एक ऐसा आकर्षक फंदा बनाया,
जो जवानी को अपने जाल में फंसाता है और उसे फलने-फूलने और मानव-जाति को उत्पन्न करने और बढ़ाने की प्रेरणा देता है ।
मैं तुम्हारी तरह इन्सान को एक मन्दिर से दूसरे मन्दिर में ले गया हूं और अनदेखी वस्तुओं के लिए उसके मूक भय को अपने लिए अनदेखी और अनजानी श्रद्धा में बदला है ।
तुम्हारी तरह मैंने उसके सिर पर भयंकर तूफ़ान पैदा किये हैं, जिससे वह हमारे सामने सिर झुकाये,
मैंने उसके पांवों के तले की धरती को उस समय तक गहरी चोटें दी हैं जबतक कि वह हमारी सहायता के लिए चिल्ला न उठे ।
मैंने तुम्हारे समान भयानक समुद्र को मानवी विश्राम के द्वीपों को निगल जाने की आज्ञा दी,

जिससे वह हमें पुकारते-पुकारते परलोक सिधार गया ।
यह सबकुछ मैंने किया है और इससे अधिक भी;
पर जो कुछ मैंने किया, वह निरर्थक और व्यर्थ है ।
जागृति बेसूद है और निद्रा सुख-रहित,
और ये स्वप्न इनसे भी तिगुने व्यर्थ और सारहीन हैं ।

तीसरा देवता

मेरे भाइयो, मेरे प्रतापी भाइयो,
तलहटी में मेंहदी की कुंज में एक नवयुवती चंद्रमा को देख-देखकर नाच रही है ।
सहस्रों ओस-कण उसकी लटाओं में अनगिनत तारों की तरह चमक रहे हैं,
और उसके पांव सहस्रों पंखों के समान फड़फड़ा रहे हैं ।

दूसरा देवता

हमने इन्सान को अंगूर-लता के समान पैदा किया,
और जीवन के प्रथम प्रभात की सुनहरी किरणों में खड़े होकर हमने धरती में हल चलाया ।
हमने कोमल कोंपलों को फूटते हुए देखा,
और विपरीत ऋतुओं के दिनों में वर्षों तक छोटी-छोटी पत्तियों को अपनी गोदी में पाला ।
हमने प्रतिकूल पवनों और गरमी-सरदी से कलियों की रक्षा की और पुष्पों को सभी दुष्ट आत्माओं से बचाया ।
और अब जबकि अंगूर-लताएं फल देने लगी हैं,

क्या तुम अंगूरों को शराब खींचने के कारखानों में न ले जाओगे और उनके रस से प्याला न भरोगे ?

तुम्हारे हाथों से अधिक बलवान किसके हाथ हैं, जो इसके फल तोड़ेंगे ?

और तुम्हारी प्यास बुझाने से अधिक श्रेष्ठ इसका और क्या उद्देश्य हो सकता है ?

इंसान देवताओं का भोजन है,

और इंसान के यश का नक्षत्र उस समय उदय होता है,

जब देवताओं के पवित्र होंठ उसके निरुद्देश्य जीवन को चूसते हैं।

जबतक समस्त मानवी गुण उसके निजी व्यक्तित्व तक सीमित रहते हैं, वह तुच्छ है।

बचपन का भोलापन, जवानी के मधुर हर्षोन्माद,

दृढ़ पौरुष की तीव्र प्रेम-भावनाएं और बुढ़ापे की बुद्धिमत्ता,

राजाओं का वैभव, योद्धाओं की विजय, कवियों की ख्याति,

ध्यानियों और संतों का सम्मान, जो कुछ इनमें है,

सब देवताओं के भोग के लिए है,

और यदि देवता इन सबका भोग न लगावें,

तो ये ऐसे भोग होंगे, जिन्हें देवताओं का वरदान प्राप्त नहीं है।

और जिस तरह अनाज का एक अनबोल दाना बुलबुल की चोंच में पहुंचकर मधुर प्रेम-गीत में बदल जाता है,

उसी तरह इंसान देवताओं का भोग बनकर देवत्व का आनन्द प्राप्त करता है।

पहला देवता

खूब ! इंसान सदा देवताओं का भोग है !
और जो कुछ इंसान से सम्बन्ध रखता है, वह सबकुछ देवताओं के अनादि अनंत थाल में आयगा !
गर्भ-धारण करने का कष्ट, बच्चा जनने की पीड़ा,
बच्चे का प्रथम रुदन, जो रात की नंगी छाती को चीरकर चला जाता है,
और मां की तीव्र वेदना, जबकि वह नींद से इसलिए जूझती है, कि वह, हारी-थकी होती हुई भी, अपनी छाती से जीवन का नया स्रोत बहावे,
दुखी जवानी की जलती हुई आहें,
दमघुटे आवेगों की गहरी अधूरी टीसें,
बंजर धरती की छाती में हल चलानेवाले का पसीने से तर ललाट,
जब जीवन अपनी इच्छा के विरुद्ध मृत्यु का स्वागत करता है,
उस समय मुरझाये हुए पीले बुढ़ापे के पछतावे—
देखो, यह है इंसान,
एक ऐसा प्राणी, जो स्वयं भूख पर पला है और भूखे देवताओं का भोग है,
एक अंगूर-लता, जिसे अमर मृत्यु अपने पांव तले रौंद देती है,
एक सुन्दर सुगंधित फूल, जो अशुभ परछाइयों की रात में खिलता है,

शोक के दिनों के खट्टे अंगूरों के गुच्छे, भय और लज्जा के क्षणों के दिन
और फिर तुम यह चाहते हो कि मैं खाऊं-पीऊं
तुम यह आज्ञा देते हो कि सिर से पांव तक जो लोग कफन में लिपटे हैं,
मैं उनके बीच बैठकर उनके पत्थर सदृश कठोर होठों से जीवन-तत्व पीऊं,
और उनके झुर्री पड़े हुए हाथों से अपनी अमरता प्राप्त करूं !

तीसरा देवता

भाइयो, मेरे भयभीत भाइयो,
एक नवयुवक गहराइयों में गीत गा रहा है,
उसका स्वर बहुत ऊंचाइयों तक गूंज रहा है.
उसकी आवाज सारे जंगल को हिला रही है,
आकाश को चीरकर पार जा रही है,
और धरती की नींद हराम कर रही है।

दूसरा देवता (जैसे सुन न रहा हो)

मधुमक्खियों की भिनभिनाहट तुम्हारे कानों को भारी लगती है,
मधु तुम्हारे होठों के लिए विष है।
काश, मैं तुम्हें सांत्वना दे सकूं !
पर मैं ऐसा करूं कैसे ?
देवता जब एक-दूसरे को बुलाते हैं तो उनकी आवाज अथाह गहराइयों में ही रह जाती है,
क्योंकि उनके बीच एक अभेद्य खाड़ी है।

अंतरिक्ष वायु-हीन है,
काश, मैं तुम्हें सांत्वना दे सकता !
मैं तुम्हारे धूमिल वायुमण्डल को गंभीरता प्रदान करूंगा।
यद्यपि शक्ति और बुद्धि में हम सब एक-दूसरे के समान हैं,
फिर भी मैं तुम्हें परामर्श देना चाहता हूं।
जब अस्त-व्यस्त तत्वों से भूमि की उत्पत्ति हुई,
और हम—आदि-सन्तान—ने एक-दूसरे को उज्ज्वल प्रकाश में देखा,
तो हमारी छातियों से वह पहला मंद-मंद-सा कांपता हुआ स्वर निकला, जिसने सहसा वायु और समुद्र की निश्चल लहरों में गति पैदा कर दी।
फिर हम एक-दूसरे के हाथ-में-हाथ डालकर इस सृष्टि के धुंधले-से प्रकाश में आगे बढ़े,
हमारे लड़खड़ाते हुए पैरों की आवाज की प्रतिध्वनि से काल-तत्व की उत्पत्ति हुई, जो चौथा देवता है
वह हमारा अनुसरण करता है, हमारे विचारों और संकल्पों पर अपना प्रभाव डालता है, और वह केवल हमारी आंखों से देखता है।
फिर जीवन ने धरती पर अपना कदम रक्खा और जीवन में आत्मा आई। यही विश्व का तीव्र राग है। हमने जीवन और आत्मा पर शासन किया। हमारे सिवा किसीको काल के माप का ज्ञान उस समय तक न हुआ और न वर्षों के निराकार स्वप्नों के बोझ की अनुभूति हुई, जबतक कि हमने सृष्टि के सातवें कल्प के उन्नति-काल में समुद्र का

विवाह सूर्य से न कर दिया ।
और इन दोनों के वैवाहिक आनन्द-सुख से भरे घर में हमने इन्सान को पैदा किया ।
इंसान एक ऐसा प्राणी है, जिसपर, दुर्बल और अधीन रहनेवाला होते हुए भी, अपने मां-बाप के स्वभाव की छाप है ।
इंसान धरती पर चलता हुआ भी ऊपर तारों को देखता है, उसीके द्वारा हम संसार के दूरस्थ प्रदेशों को जानेवाले मार्गों को ढूंढ़ते हैं—हां, इसी नाशवान प्राणी को ।
गंदले पानीवाले पोखरों के तटों पर पैदा होनेवाले नरकटों से हम अपनी बांसुरी बनाते हैं और उसकी खोखली छाती से अपनी आवाज इस मूक संसार तक पहुंचाते हैं । सूर्य-विहीन उत्तर से लेकर दक्षिण की सूर्य से झुलसी बालू तक कमलों के सुदर प्रदेश से जहां सूर्य उदय होता है,
उन भयंकर टापुओं तक जहां सूर्य अस्त होता है,
दुर्बल हृदय इंसान
हमारी इच्छाओं से शक्ति प्राप्त करके हाथ में तलवार और भेरी लेकर रणभूमि में उतरने की हिम्मत करता है ।
वह हमारे ही संकल्पों की दुंदुभि बजाता है,
वह हमारे ही प्रभुत्व की घोषणा करता है ।
उसकी प्रेम-पूर्ण धाराएं हमारी इच्छाओं के समुद्र तक पहुंचाने वाली नदियां हैं ।
पर्वतों की चोटियों पर बैठे हुए हम इंसान की नींद में अपने स्वप्न देखते हैं ।
हम चाहते हैं कि वह गो-धूलि की घाटी से निकले और

अपनी पूर्णता को पर्वतों पर प्राप्त करे।

हमारे हाथ उन तूफानों का नेतृत्व करते हैं, जो संसार को उड़ा ले जाते हैं

और इंसान को निष्फल शांति के बाहर निकालकर उसका निर्माणकारी संघर्ष की ओर आह्वान करे,

जिसमे वह विजय-पर-विजय प्राप्त करता जाय।

हमारी आंखों में वह दृष्टि है, जो इन्सान की आत्मा को प्रकाशमान बना देती है,

और जो उसे महिमामयी एकान्त तथा विद्रोही भविष्यवाणी की ओर ले जाती है, और यहांतक कि उसे फांसी के तख्ते पर चढ़ने का साहस देती है।

इन्सान का जन्म बंधनों में हुआ है

और बंधनों में ही उसके सम्मान और पुरस्कार निहित हैं।

इन्सान को ही हम अपने मनोभावों को प्रकट करने का साधन बनाते हैं

और उसके जीवन में अपनी आत्म-सिद्धि खोजते हैं।

यदि मानव-हृदय धूलि से कुंठित बन जाय,

तो फिर और किसके हृदय से हमारी आवाजों की प्रतिध्वनि आयेगी ?

यदि इन्सान की आंखों में रात का अंधेरा छा जाय तो फिर हमारे प्रकाश की ओर कौन देखेगा ?

और तुम इन्सान का क्या करोगे, जो हमारे हृदय की पहली संतान और हमारी प्रतिमूर्ति है ?

तीसरा देवता

भाइयो, मेरे शक्तिशाली भाइयो,
नर्तकी के पांव गीत के नशे से उन्मत्त हो रहे हैं,
उसकी गति ने वायु में थिरकन पैदा कर दी है
और कपोत की भांति उसके हाथ ऊपर को नाच रहे हैं।

पहला देवता

एक लवा दूसरे लवे को पुकारता है,
पर बाज़ ऊंचा उड़ता जाता है,
और उनके गीत को सुनने के लिए नहीं ठहरता।
तुम मुझे उपदेश देते हो कि आत्म-प्रेम
इंसान की पूजा से सिद्ध होगा।
और तुम मुझे इंसान की दासता से संतुष्ट होना सिखाते हो,
पर मेरा आत्म-प्रेम असीम और अपरिमित है।
मैं मिट्टी के बने इस नाशवान शरीर से स्वतन्त्र और ऊंचा होकर स्वर्ग में अपना सिंहासन बनाऊंगा।
मेरी भुजाएं अंतरिक्ष के गिर्द घेरा डालेंगी और दिग-दिगन्त को आबद्ध कर लेंगी।
मैं आकाश-गंगा को अपनी कमान बनाऊंगा,
और तारों को अपने तीर,
और फिर अनन्त के द्वारा अनन्त को जीतूंगा।

पर यदि यह बात तुम्हारे बस में भी हो तब भी तुम ऐसा न करोगे।

जिस प्रकार इंसान इंसान के लिए है,
वैसे ही देवता देवताओं के लिए है।
नहीं-नहीं, तुम तो इसके विपरीत मेरे क्लांत हृदय को उस युग की याद दिलाते हो, जिसे हमने कोहरे में बिताया,
जब मेरी आत्मा अपनेको पर्वतों में ढूंढ़ती फिरती थी,
और मेरी आंखें सुप्त समुद्रों में अपनी परछाई का पीछा कर रही थीं;
यद्यपि जब मैंने जन्म लिया तब मेरा व्यतीत मर गया,
और अब उसकी समाधि पर केवल मौन-ही-मौन है
और उसकी छाती पर वायु से उड़ी हुई बालू की तहें जम गई है।
ऐ बीते हुए दिन ! फिर न लौटनेवाले दिन !
जंजीरों से बंधे हुए मेरे देवत्व की जननी !
मुझे बता, किस देवेन्द्र ने तुझे तेरी उड़ान में पकड़ा
और पिंजड़े में तुझे जन्म देने वाला बनाया ?
किस महान सूर्य ने तेरी छाती को उष्णता प्रदान की, जिससे मेरा जन्म हुआ ?
मैं तुझे आशीर्वाद नहीं देता, पर तुझे शाप भी नहीं दूंगा,
क्योंकि जिस प्रकार तूने मुझपर जीवन का भार डाला है,
उसी प्रकार मैंने भी इन्सान को जीवन के बोझ से लाद दिया है।
पर मैं तुझसे कम निर्दयी हूं।
मैंने अमर होते हुए भी इन्सान को नश्वर बनाया,
और तूने मरते हुए भी मुझे अमर बनाया।

ए बीते हुए दिन ! फिर से न लौटनेवाले दिन !
क्या तू प्रलय के दिन लौटेगा,
जिससे मैं तेरा पल्ला पकड़कर न्याय करा सकूं ?
क्या तू जीवन के नव-प्रभात के साथ जागेगा,
जिससे मैं इस धरा पर रहनेवाली तेरी शेष स्मृति को संसार से मिटा दूं ?
मैं चाहता हूं कि तू प्राचीन समय के मृत जीवों के साथ फिर से पैदा हो
और उस समय तक जीवित रहे, जबतक कि धरती के प्राण उसके अपने कड़वे फलों से घुट न जायं,
और सारे समुद्र वध किये हुए मानवों की लाशों से सड़ न जायं
और विपदाओं पर विपदाएं आ-आकर धरती की व्यर्थ उत्पादक शक्ति को क्षय न कर दें।

तीसरा देवता

भाइयो, मेरे पवित्र भाइयो,
लड़की ने गीत सुन लिया है,
अब वह गानेवाले को ढूंढ़ रही है।
आनन्द से मस्त हिरनी के बच्चे के समान वह चट्टानों और नदियों पर छलांग लगा रही है
और हर तरफ मुंह उठा-उठाकर देख रही है।
जब इंसान के उद्देश्य आधे भी सफल होते हैं,
ओह, तब उसकी नाशवान अभिलाषाओं में कितनी प्रसन्नता होती है !

उसके उन होंठों पर मधुर मुस्कान खेलती है,
जो भावी सुख के पूर्वाभास से कांप रहे हैं !
स्वर्ग से कौन-सा फूल गिरा है,
नर्क से कौन-सी ज्वाला उठी है,
जिसने खामोशी के हृदय को इस अनन्त आनन्द और भय से
आतंकित कर दिया है ?
पर्वतों की चोटियों पर हमने कौन-सा स्वप्न देखा है,
हमने ऐसी कौन-सी वायु संसार को दी है,
जिसने ऊंघती हुई घाटी को जगा दिया है
और रात को चौकन्ना कर दिया है ?

दूसरा देवता

प्रकृति ने तुम्हें यह पवित्र करघा दिया है
और कपड़ा बुनने की कला सिखाई है।
यह करघा और यह कला सदा तुम्हारी सम्पदा रहेगी,
ये तुम्हारे काले और सफेद तार,
लाल और सुनहरे तार,
सभी तुम्हारे हैं।
फिर भी तुम अपने लिए कपड़े की शिकायत कर रहे हो।
स्वयं तुम्हारे हाथों ने सजीव वायु और आग-रूपी तारों से
इंसान की आत्मा को बुनकर तैयार किया है,
फिर क्या अब तुम स्वयं ही इन तारों को तोड़ दोगे,
और अपनी कुशल उंगलियों को सदा के लिए निकम्मा बना
दोगे ?

पहला देवता

नहीं, मैं अपने हाथों को ऐसे अनिर्मित अनन्त की रचना में लगाऊंगा,
मैं ऐसे मार्गों पर चलूंगा, जिनपर आजतक कोई नहीं चला।
ऐसे गीतों के सुनने में क्या सुख है, जिन्हें हम बार-बार सुन चुके हैं,
जिनके गाये जाने से पहले ही
हमारे कान उनकी परिचित ध्वनियों और सुरों की कल्पना कर लेते हैं ?
मेरा हृदय तो उन अद्भुत वस्तुओं की इच्छा कर रहा है,
जो उसकी कल्पना से भी परे हैं ।
मैं अपनी आत्मा को उस अज्ञात की ओर ले जाऊंगा,
जहां याद टिकती नहीं है ।
ओह, मुझे प्राप्त यश का प्रलोभन मत दो,
मुझे अपने या मेरे स्वप्नों से ढांडस मत बंधाओ,
क्योंकि जो कुछ मैं हूं या जो कुछ धरती पर मौजूद है,
या जो कुछ भविष्य में होगा, उस सबकी ओर मेरी आत्मा प्रवृत्त नहीं होती।
ए मेरी आत्मा !
तेरा चेहरा खामोश है।
तेरी आंखों में रात की परछाइयां सो रही हैं,
पर तेरी खामोशी बड़ी भयानक है,
और स्वयं तू भी डरावनी है।

तीसरा देवता

भाइयो, मेरे पवित्र भाइयो,
अब लड़की ने गायक को पा लिया है।
वह उसका हर्ष से उन्मत्त चेहरा देखती है।
अंगूरों और सरसराती हुई बेलों और झाड़ियों में,
वह चीते की तरह अपने हल्के-हल्के कदम फुर्ती से रखती हुई जा रही है।
अब गायक अपने आनन्द-दायक गीतों को अलापता हुआ,
इस लड़की को टकटकी बांध कर निहारता है।

मेरे भाइयो, मेरे असावधान भाइयो,
क्या यह कोई नया देवता है,
जिसने प्रेम से उन्मत्त होकर लाल और सफेद तारों का जाल बुना है ?
या कोई तारा आकाश से टूटकर अपने मार्ग से भटक गया है ?
जिसका रहस्य रात प्रभात से छिपा रही है,
और जिसका हाथ हमारे संसार पर फैला हुआ है ?

पहला देवता

ओ मेरी आत्मा,
मेरी आत्मा,
ओ तेरा प्रज्ज्वलित मण्डल
मुझे घेरे हुए है।

मैं कैसे तेरे प्रवाह का नेतृत्व करूं,
और तेरी उत्सुकता को किस अंतरिक्ष की ओर प्रवृत्त करूं ?

ओ मेरी सखाहीन आत्मा,
तू भूख में अपने-आपका शिकार करती है,
और अपने ही आंसुओं से तू अपनी प्यास बुझाती है,
क्योंकि न तो रात अपनी ओस तेरे प्याले में भरती है
और न दिन तेरे लिए कुछ लाता है ।

ओ मेरी आत्मा, मेरी आत्मा,
तू इच्छाओं से लदा हुआ जहाज है, जो रेत में धंस गया है ।
तेरे पालों को भरने के लिए हवा कहां से आयगी,
और कौन-सा चढ़ता हुआ ज्वार तेरी पतवार को मुक्त करेगा?
तेरा लंगर नीचे डाल दिया गया है और तेरे पाल खुलने को तैयार हैं,
पर तेरे सिर पर आकाश मौन है
और स्थिर समुद्र तेरी निश्चलता पर हँस रहा है ।

अब तेरे और मेरे लिए क्या आशा है ?
त्रिलोक का कौन-सा परिवर्तन, स्वर्गों का कौन-सा नया उद्देश्य,
तुझे अंगीकार करेगा ?
क्या अनंत के गर्भ ने तेरे लिए किसी नये मुक्तिदाता को धारण किया है,
जो तेरी अपनी दृष्टि से भी अधिक शक्तिशाली है,
जिसके हाथ तुझे तेरे संसार-बंधन से मुक्ति दिलायंगे ?

दूसरा देवता

अपने सतत आर्तनाद और संतप्त हृदय की सासों को रोको,
क्योंकि यह अनंत सृष्टि तेरे लिए बहरी है,
और यह आकाश भी तेरी उपेक्षा कर रहा है।
हम स्वयं ही अनंत के कूल हैं और स्वयं ही परमात्मा हैं,
और हमारे और सीमारहित अनंत के बीच हमारे निराकार उद्वेगों और उनके उद्देश्यों के सिवा और कुछ नहीं है।

तुम अज्ञात को पुकारते हो ?
पर वह अज्ञात तो चलते-फिरते कुहर का परिधान पहने तुम्हारे अपनी ही आत्मा की गहराइयों में बैठा है।
हां-हां, तुम्हारा मुक्तिदाता तुम्हारी अपनी आत्मा में निद्राग्रस्त है,
और वह सोता हुआ भी उस सबकुछ को देखता है, जिसे तुम्हारी जागती हुई आंख भी नहीं देख सकती।
यही हमारे अस्तित्व का रहस्य है।
क्या तुम फसल को बिना इकट्ठा किये छोड़ दोगे,
जिससे तुम जल्दी-जल्दी, इन सोई हुई क्यारियों में, फिर से बीज बो सको ?
तुम मार्गहीन खेतों और ऊबड़-खाबड़ स्थानों में अपने बादलों को क्यों फैलाते हो,
जबकि तुम्हारी अपनी टोली तुम्हें खोज रही है और तुम्हारी चौकसी में इकट्ठा रहने की इच्छुक है ?
तनिक ठहरो और दुनिया पर निगाह डालो।

अपने प्रेम के दूध-पीते बच्चों को देखो ।
धरती ही तुम्हारा घर है और धरती ही तुम्हारा सिंहासन है,
इंसान की उच्चतम आशाओं से भी दूर तुम्हारा हाथ उसके भाग्य को सहारा देनेवाला है ।
जो सुख और दुख में तुम्हारे पास पहुंचने का उद्यम करता है,
तुम उसको छोड़ोगे ?
तुम उसकी उत्सुक आंखों की ओर से अपना मुंह नहीं मोड़ोगे ।

पहला देवता

क्या प्रभात रात के हृदय को अपनी छाती से लगाये रहता है ?
क्या कभी समुद्र डूबे हुए मृत शरीरों की परवा करेगा ?
प्रभात के समान मेरी आत्मा भी मेरे अंतरंग से उठती है—
नंगी और स्वतंत्र,
और आलोड़ित समुद्र के समान मेरा हृदय भी इंसान और संसार के नाशवान अवशेषों को बाहर फेंक देता है ।
मैं अब उससे चिपटा नहीं रहूंगा, जो मुझसे चिपटा रहेगा ।
बल्कि उसके हृदय में निवास करूंगा, जो मेरी पहुंच से बाहर है ।

तीसरा देवता

भाइयो, मेरे भाइयो,
देखो, वे दोनों आकाशदर्शी आत्माएं क्षितिज पर एक-दूसरे के आमने-सामने खड़ी हैं,
मौन और आश्चर्य से एक-दूसरे को देखती हैं ।

गायक का गीत बंद हो चुका है,
पर सूरज की गरमी से सूखा हुआ उसका गला अभी गीत से स्पन्दित हो रहा है।
लड़की के अंगों का सुखद नाच समाप्त हो चुका है,
पर अभी उसपर नींद की मस्ती नहीं छाई है।

भाइयो, मेरे अद्भुत भाइयो,
रात बीत चुकी है,
चांद पहले से अधिक प्रकाशमान है,
हरियाली और समुद्र के बीच एक हर्ष-भरी आवाज तुम्हें और मुझे अपनी ओर बुला रही है।

दूसरा देवता

अस्तित्व में आना और उन्नति करना, जलते हुए सूरज के सामने तपना,
जीवित रहना और जीवित इंसानों की रातों की इसी तरह चौकसी करना,
जिस तरह मृगशिरा नक्षत्र हमारी चौकसी करता है।
राजसी गरिमा से ऊंचे और मुकुटधारी सिर से चारों ओर चलनेवाले पवन का सामना करना,
और अपनी मंद जीवन-दायक सांसों से मानव-जाति के दुखों को दूर करना,
क्या यही हमारे जीवन के उद्देश्य हैं?
ऐसे तो जुलाहा भी अंधेरे में अपने करघे के सामने बैठता है,
और कुम्हार भी अपने चाक को बिना ध्यान के

निरन्तर घुमाता है ।
पर हम जो जागरूक और ज्ञानवान हैं,
हम अनुमान और दैवयोग के सब बंधनों से स्वतंत्र हैं,
हम न ठहरते हैं और न सोच-विचार के लिए देर करते हैं ।
हम सब व्यग्र संदेहों और शंकाओं से परे हैं ।
आओ, हम सन्तोष करें और महत्वाकांक्षियों को जाने दें ।
आओ, हम नदियों के समान पर्वतों के किनारों से बचते हुए समुद्र की ओर बहें ।
जब हम उनके हृदय में लीन हो जायेंगे तब हममें भविष्य के लिए कोई विवाद और झगड़ा न होगा ।

पहला देवता

ओह, यह निरन्तर सोच-विचार की पीड़ा
यह दिन को रात से और रात को दिन से मिलाने की चौकसी,
यह निरन्तर स्मृति और विस्मृति का ज्वार-भाटा,
यह भाग्यों के बीज बोना और यह केवल आशाओं की फसल काटना,
यह आत्मा को रेत-मिट्टी से उठाकर ऊपर कुहर में ले जाने का सदा चालू रहनेवाला काम,
केवल मिट्टी की इच्छा करना और इच्छाओं के भार से मिट्टी में गिर जाना,
और फिर अधिक इच्छाओं के साथ कुहर को ढूंढ़ते रहना
और यह काल को नापने का अनवरत क्रम !
क्या मेरी आत्मा एक ऐसा सागर बनी रहे, जिसकी लहरें

सदा आपस में टकराती हैं,
या ऐसा आकाश, जहां तेज हवाएं तूफान पैदा करती रहती हैं ?

यदि मैं एक इंसान या पत्थर का अंधा टुकड़ा होता
तो मैं यह धैर्य से सहन कर लेता ।
या यदि मैं परमात्मा होता,
जो इंसानों और देवताओं की रिक्तता को परिपूर्ण करता है,
तो भी मुझे सन्तोष हो जाता ।
पर मैं और तुम न संसारी जीव हैं, और न सिद्ध लोक के परमात्मा ।
हम तो केवल प्रकाश की वह मंद लौ हैं, जो एक क्षितिज और दूसरे क्षितिज के बीच में उठती और बुझती रहती हैं ।
हम देवता हैं जो संसार को थामे हुए हैं और उससे बंधे हुए हैं।
हमारे भाग्य में दूसरों के ढोल बजाना लिखा है,
जबकि संगीत और सांस कहीं बहुत दूर से आती है ।
और मैं विद्रोह करता हूं ।
मैं अपने-आपको मिटाकर शून्य कर दूंगा,
मैं अपने-आपको सदा के लिए तुम्हारी आंखों से ओझल कर दूंगा और उस खामोश नवयुवक की याद से उतर जाऊंगा, जो हमारा छोटा भाई है और जो हमारे पास बैठा हुआ सामने की घाटी को देख रहा है ।
यद्यपि उसके होठों में स्पन्दन है, फिर भी उसके मुंह से एक शब्द भी नहीं निकलता है ।

तीसरा देवता

मेरे असावधान भाइयो,
मैं तुमसे बारम्बार कहता हूं, मैं सचमुच तुमसे कहता हूं, पर तुम हो कि अपने सिवा किसीकी सुनते ही नहीं !
तुमसे मेरी विनती है कि अपनी और मेरी कीर्ति को देखो,
पर तुम मेरी ओर से मुंह फेर लेते हो और अपनी आंखें बंद कर लेते हो,
और अपने सिंहासनों को हिलाते हो।
तुम ऊर्ध्वलोक और पाताल पर राज करनेवाले सम्राट हो।
ओ, स्वयं झुके हुए देवताओ, तुम्हारा विगत तुम्हारे भविष्य पर सदा ईर्ष्या करता है।
ए जीवन से व्याकुल देवताओ,
तुम्हारी अपनी वाणी ही तुम्हारे क्रोध को भड़कायेगी,
और भूमंडल को बिजली की कड़क से गुंजायेगी।
तुम्हारी आपसी कलह उस प्राचीन वीणा की झंकार-मात्र है,
जिसके तारों का संगीत दैवी अंगुलियों को कुछ-कुछ विस्मरण होगया है,
जिसके सितार और झांझ और मंजीरे सौर-मंडल के नक्षत्र हैं।
जब कि तुम बड़बड़ा और झुंझला रहे हो,
उसकी वीणा के तार झंकार रहे हैं, उसकी झांझें झनन-झनन कर रही हैं,
मैं तुमसे उसका गीत सुनने की प्रार्थना करता हूं।
देखो, एक स्त्री और पुरुष,

मानो एक अग्नि-शिखा दूसरी अग्नि-शिखा से मिली हुई है,
और आनन्द-मंगल में मस्त है।
सुनहरी धरती की छाती से रस चूसनेवाली जड़ें ही गगन-चुम्बी ज्योतिर्मय फूल उगाती हैं।
हम ही वह सुनहरी छाती हैं,
हम ही वह स्थायी गगन हैं।
हमारी आत्मा और स्वयं जीवन की आत्मा, तुम्हारी आत्मा और मेरी आत्मा आज रात उद्दीप्त हृदयवाले संगीतज्ञ के कंठ में विराजमान हैं।
और उन्होंने ही नाचती हुई लड़की को थिरकती हुई लहरों के वस्त्र पहना रक्खे हैं।
तुम्हारा राजदंड उसके भाग्य पर प्रभाव नहीं डाल सकता,
क्योंकि तुम्हारी बेचैनी केवल एक इच्छा-मात्र है।
यह और शेष सबकुछ एक स्त्री और पुरुष के प्रेम के तूफान में बह गये।

दूसरा देवता

हां, इस नवयुवती और पुरुष के प्रेम के विषय में तुम्हारा क्या विचार है ?
देखो, पूर्व की हवाएं किस प्रकार नवयुवती के थिरकते हुए पांव के साथ नाच रही हैं,
और पश्चिम की हवाएं किस प्रकार नवयुवक के मधुर गीत के साथ सर-सर करती हुई ऊंची उठ रही हैं।
देखो ! हमारा पवित्र उद्देश्य अब एक नाचती हुई नवयुवती के

सामने एक गाते हुए नवयुवक की विनती और प्रार्थना के रूप में सफल हो रहा है।

पहला देवता

मैं न अपनी निगाह नीचे की ओर इस धरती के मिथ्या विचार पर डालूंगा और न उसके नासमझ बच्चों की हल्की-हल्की पीड़ा पर !
यह प्रेम क्या है ?
यह प्रेम उस खाल से मढ़े ढोल के सिवा और क्या है,
जो इंसान और उसकी मधुर पर अनिश्चित आशाओं के लम्बे जुलूस को दूसरी मंद पीड़ा की तरफ ले जाता है ?
मैं इस घाटी की तरफ नहीं देखूंगा।
आखिर वहां देखने के लिए उस नवयुवक और नवयुवती के सिवा है ही क्या, जो वन में खड़े हैं !
यह वन भी उन्हें अपने फंदे में फंसाने के लिए ही पैदा हुआ है,
जिससे वे अपने-आपको भूलकर हमारे अजन्मे भविष्य के लिए नये-नये प्राणियों को जन्म दें !

तीसरा देवता

आह, यह ज्ञान की पीड़ा,
भेद लेने और सवाल-जवाब करने का यह अंधकारमय परदा,
जिसे हमने संसार के चेहरे पर डाल रक्खा है,
और मानवी सहनशीलता की यह कठोर चुनौती !
हम पत्थर के नीचे मोम की एक मूर्ति बना कर रख देते हे

ार यह घोषणा करते हैं कि यह मिट्टी से बनी हुई है और मिट्टी
में इसे अपने जीवन का अन्त खोजने दो।
म अपने हाथों में अग्नि की लपट पकड़कर अपने मन में
हते हैं कि यह हमारा ही अंश है, जो हमारी तरफ वापस
ौट रहा है।
म कहते हैं कि यह हमारी ही सांस का अंश है, जो हमसे
ालग हो चुका है और अब अधिक सुगंध पाने के लिए
मारे हाथों और होठों की ओर बार-बार आता है।
ो धरती के देवताओ, मेरे भाइयो,
ों तो हम पर्वत पर विराजमान हैं,
ार हमारा सम्बन्ध धरती से ही है,
जहां हम इंमान के द्वारा उसके भाग्य के सुनहरी क्षणों की इच्छा
करते हैं।
क्या हमारी बुद्धि का यही काम है कि उसकी आंखों के सौंदर्य
का अपहरण करें?
क्या हमारे प्रयत्न उसकी इच्छाओं को मार दें या उनको
अपनी इच्छाओं के अधीन कर लें?

जहा प्रेम की सेनाएं पड़ाव डाले हुई हैं,
वहां तुम्हारे तर्क-वितर्क की सेनाएं क्या कर सकेंगी?
जो लोग प्रेम से पराजित हो जाते हैं,
जिनके शरीरों पर कामदेव का रथ समुद्र से पर्वत तक और
फिर पर्वत से समुद्र तक चला जाता है,
वे अब भी लजीले भाव से आपस में कुछ अर्द्धालिंगन-सा करते

खड़े हैं ।
फूलों को फूलों से मिलाकर वे पवित्र सुगंध को सूंघते हैं,
और आत्मा को आत्मा से मिलाकर वे जीवन का सार पा रहे हैं ।
इनकी आंखों से ऐसा मालूम होता है,
मानो वे तुमसे और मुझसे कोई प्रार्थना करना चाहते हैं ।
प्रेम एक रात है, जिसने अपना आंचल ओस-कणों से अभिषिक्त कुंजों पर फैला रक्खा है,
प्रेम एक आकाश है, जो एक हरे-भरे मैदान के समान है, और जिसके समस्त तारों ने जुगनुओं का रूप धारण कर लिया है ।
यह सच है कि हम पहुंच से परे हैं,
यह भी सच है कि हम ही सर्वोच्च परमात्मा हैं,
पर प्रेम हमारी शंकाओं से अतीत है,
क्योंकि प्रेम हमारे गीतों से अधिक ऊंचा उड़ता है ।

दूसरा देवता

क्या तुम दूर किसी दूसरे नक्षत्र की खोज करते हो,
पर इस तारे का विचार ही नहीं करते,
जिसमें तुम्हारे अस्तित्व की जड़ें गड़ी हैं ।
अंतरिक्ष में स्थिरता का केन्द्र-बिन्दु इसके सिवा कोई नहीं,
जहां एक आत्मा का दूसरी आत्मा से विवाह होता है,
और सौन्दर्य जिसका साक्षी और पुरोहित है ।
लो, देखो, ज़रा अच्छी तरह देखो कि सौन्दर्य हमारे पांव में बिखरा पड़ा है,

हमारी अंजलियां सौन्दर्य से भरी हैं, जिससे वे हमारे होठों को
सज्जित करें।
जो अत्यंत दूर है वही निकट है,
और जहां सौन्दर्य है, वहीं सब-कुछ है।

ओ उच्च स्वप्नदर्शी भाई,
समय की धूमिल सीमाओं से हमारे पास वापस आ !
अपने पांव से अदृष्ट समय और अदृष्ट स्थान के बंधन खोल,
और हमारे साथ इस सुरक्षित स्थान में जीवन बिता,
जिसे तेरे हाथों ने हमारे हाथ से हाथ मिलाकर पत्थर-
पर-पत्थर रखकर बनाया।
उदासीनता से सोच-विचार का अपना परिधान उतार दे,
और इस हरी-भरी सुखमय धरती के स्वामित्व में हमारा
साथी बन।

पहला देवता

हे अनादि अनन्त बलिवेदी, क्या आज रात तुझे बलि के लिए
किसी देवता की आवश्यकता है ?
यदि है, तो फिर मैं तेरे सामने आता हूं,
और अपने आवेगों और पीड़ाओं को तेरे सामने अर्पित
करता हूं।
और देखो, यह नाचती हुई सुन्दरी भी है,
जो हमारी प्राचीन उत्सुकताओं से बनाई गई है,
और गायक भी वायु को हमारे ही गीतों से भर रहा है।

इस नाच और गाने के बीच,
मेरे हृदय में देवत्व की बलि चढ़ चुकी है।
और अब मेरे प्राण और शरीर में दैवी हृदय उस ऊंचे दैवी हृदय को वायुमंडल में पुकारता है।
और जिस इन्सानी तन से मैं तंग आ चुका था अब मुझे परमात्मा की ओर पुकार रहा है।
जिस सौंदर्य को हम अनादि से ढूंढ़ रहे थे,
वह भी हमें परमात्मा की ओर पुकार रहा है।
मैंने ध्यान दिया और यह पुकार सुनी है,
और अब मैंने इसके सामने आत्म-समर्पण कर दिया है।
सौंदर्य वह पथ है, जो आत्मजित मानव को 'स्व' की ओर ले जाता है।
तुम अपनी वीणा को बजाओ,
मैं इस पथ पर अवश्य चलना चाहता हूं।
यह पथ ही प्रभात तक फैला हुआ है।

तीसरा देवता

प्रेम की जीत होती है,
सरोवर के चतुर्दिक हरे, श्वेत और रंगबिरंगे पुष्पों में प्रेम-ही-प्रेम है,
बुर्जियां और बरामदों में दीख पड़नेवाले स्वाभिमान और वैभव में भी प्रेम है,
हरे-भरे उद्यानों और निर्जन मरुस्थलों में भी प्रेम है।
प्रेम ही हमारा प्रभु है, प्रेम ही हमारा स्वामी है।

प्रेम न तो शरीर को विलास में क्षय करने में है और न इच्छाओं का दमन करके मिटा देने में,
जबकि आत्माओं और इच्छाओं में विजय-प्राप्ति के लिए संघर्ष हो रहा हो।
न प्रेम हाड़-मांस है, जो आत्मा के विरुद्ध हथियार उठाता है।
प्रेम विद्रोह नहीं करता।
यह केवल पवित्र तपोवन की ओर जाने के लिए भाग्य के पद-दलित मार्ग को त्याग देता है,
जिससे यह अपने रहस्यों को गीतों की लय और नृत्यों की झंकार के द्वारा अनंत में मिला दे।
प्रेम एक नवयुवक है, जिसके सब बंधन टूट चुके हैं,
प्रेम वह पुरुषत्व है, जिसमें विषय-वासना-रूपी मैल नाम को भी नहीं है,
यह वह नारीत्व है, जो स्वर्गिक अग्नि से गरम और उसकी ज्योति से प्रकाशमान है और हमारे स्वर्ग से भी गम्भीर है।
प्रेम आत्मा में अतीत का दूरस्थ अट्टहास है।
यह वह उन्मत्त आक्रमण है, जो तुम्हें शांत करके जागृति की ओर ले जाता है।
यह पृथ्वी पर एक नया प्रभात है,
यह एक ऐसा सुदिन है, जो तुम्हारी या मेरी आंखों में अभी प्राप्त नहीं हुआ है ?
पर जिसे पहले से ही उसके महान हृदय ने प्राप्त कर लिया है।
भाइयो, मेरे भाइयो,
बधू उदयाचल की ओर से उषा-किरणों पर चढ़कर आ रही है,

अौर वर अस्ताचल की ओर से लाल किरणों पर आसीन होकर,
बीच घाटी में विवाह है ।
यह इतना महान दिन है कि इसका वर्णन शब्दों में नहीं किया जा सकता ।

दूसरा देवता

सृष्टि के आदि से,
जबकि उसने मैदानों को पर्वतों और घाटियों से मिलाया है,
ऐसा ही होता रहा है,
और अन्तिम प्रलय तक ऐसा ही होता रहेगा।
यह हमारे हृदयों की अंतरंग कल्पनाएं हैं,
जो घाटी में झूमती हुई टहनियों के रूप में प्रकट हुई हैं,
हम सुरीले गीतों की सुगंध के सुमन हैं,
जो आकाश की ओर फैल रही है ।
अमर और नाशवान दो नदियां समुद्र की ओर बह रही हैं ।
एक आवाज़ और दूसरी आवाज़ के बीच हमारे कानों के शून्य के सिवा और दूसरा कोई शून्य नहीं है ।
समय हमारी सुनने की शक्ति को अधिक तीव्र कर रहा है और उसे अधिक उत्सुक बना रहा है ।
इन्सानों के अपने सन्देह ही उसकी आवाज को धीमा करते हैं ।
पर हम इन सन्देहों से ऊपर उठ चुके हैं ।
इन्सान तो हमारे बाल-हृदयों की सन्तान है,
इन्सान एक प्राणी है, जो धीरे-धीरे देवताओं के गुण प्राप्त करता है,

और जिसके सुखों और दुखों के बीच हम सोते और स्वप्न देखते हैं।

पहला देवता

गायक को गाने दो और नर्तकी को अपना नृत्य आरम्भ करने दो,
मुझे कुछ देर के लिए संतुष्ट होने दो।
आज की रात मेरी आत्मा को शांति प्राप्त करने दो।
शायद मैं तन्द्रा-मग्न हो जाऊं और मैं तन्द्रा में एक अधिक प्रकाशमान संसार को देख सकूं, और देख सकूं ऐसे ज्योतिर्मय मानवों को,
जो मेरे मन के अनुकूल हों।

तीसरा देवता

अब मैं उठूंगा और अपने-आपको समय और अंतरिक्ष के बंधनों से मुक्त कर लूंगा,
मैं उस अछूते खेत में नाचूंगा,
और नर्तकी के पांव मेरे पांव के साथ-साथ गति करेंगे,
मैं इस उच्च आकाश में गाऊंगा,
और इन्सान की आवाज मेरी आवाज में गूंजेगी।

हम गोधूलि के आंचल में पहुंच जायंगे।
सम्भव है, हम एक नवीन संसार के प्रभात में जागें,
परन्तु प्रेम फिर भी स्थायी रहेगा,
और इसकी अंगुलियों के चिन्ह किसी तरह भी नहीं मिटेंगे।

पवित्र अग्निकुंड जल रहा है,
चिनगारियां उठ रही हैं और प्रत्येक चिनगारी एक सूर्य है।
हमारे लिए यही श्रेष्ठ और अधिक बुद्धिमत्तापूर्ण है कि हम एक छायादार कुंज को ढूंढें और अपनी सांसारिक अनन्तता में सो जायं,
और प्रेम, इंसानी और कोमल प्रेम, भविष्य पर राज करे।

: २ :

गद्य-गीत

१. मंदिर के द्वार पर

मैंने अपने होठ पवित्र अग्नि से शुद्ध किये कि मैं प्रेम के सम्बन्ध में कुछ कह सकूं। पर जब मैंने अपने होठ खोले तो मैं मूक बन गया।

प्रेम से परिचित होने से पहले मैं प्रेम के गीत गाया करता था, पर जब मैं प्रेम से परिचित हुआ तो शब्द मेरे मुख में सांस बनकर रह गये और जो संगीत बाहर आने के लिए बेचैनी से मेरे हृदय में तरंगें मार रहा था, वह गहरे मौन में खोगया।

इससे पहले यदि तुम मुझसे प्रेम के रहस्यों और भेदों के बारे में पूछते तो मैं तुम्हें पूरे विश्वास के साथ उत्तर देता। पर अब जबकि प्रेम ने मुझे अपने आंचल में छिपा लिया है, मैं स्वयं तुम्हारे सबके सामने प्रेम की विधियों, शैलियों और उसके चमत्कारों के सम्बन्ध में पूछने के लिए आता हूं।

तुममें ऐसा कौन है, जो मेरे अंतरंग को, मेरे हृदय और मेरी आत्मा को, मुझपर प्रकट करे ?

अब मुझे बताओ कि मेरे हृदय में यह कैसी ज्वाला धधक रही है, जिसने मेरी शक्ति को क्षीण कर दिया है और मेरी आशाओं और इच्छाओं को जलाकर भस्म कर दिया है ?

यह किसके पतले, सुकोमल और प्यारे हाथ हैं, जिन्होंने मेरी आत्मा को एकान्त के क्षणों में अपने बस में कर लिया है और मेरे हृदय के प्याले में सुख की तिक्तता और दुःख की

मिठास की मिली-जुली मदिरा उंडेल दी है ?

यह किसके पंख हैं, जो रात की लम्बी निस्तब्धता में मेरे पलंग के इर्द-गिर्द फड़फड़ाते हैं, जिससे मैं रात भर जागता और न जाने किसकी प्रतीक्षा करता रहता हूं ?

मैं उस आवाज की ओर ध्यान देता हूं, जिसे मैं सुन नहीं सकता, और जो दिखाई नहीं देता, उसे देख रहा हूं।

मैं उस वस्तु का ध्यान करता हूं, जिसे मैं समझ नहीं सकता और उस वस्तु को पाता हूं, जिसे मैंने प्राप्त नहीं किया।

हां, मैं जाग रहा हूं और आहें भर रहा हूं, क्योंकि मेरे लिए आहें और शोक आनंद और हँसी के अट्टहासों से अधिक प्यारे हैं।

मैं एक ऐसी अदृश्य शक्ति के हाथों मे जाग्रत हूं, जो मुझे मारती और फिर जीवित करती है, यहांतक कि सवेरा हो जाता है और मेरे कमरे में प्रकाश भर जाता है।

फिर मैं सो जाता हूं, पर मेरी थकी हुई पलकों में मेरे जागरण की प्रतिछाया लहराती रहती है और मेरी पाषाण-शैया के इर्द-गिर्द एक स्वप्न घूमता रहता है।

... .

फिर यह क्या है, जिसे हम प्रेम कहते हैं ?

मुझे बताओ, हमारी इस आत्मा की परछांई के पीछे यह क्या रहस्यमय भेद छिपा हुआ है और जो हमारे अस्तित्व के अंतरंग में निवास करता है ?

यह महान मुक्ति क्या है, जो समस्त परिणामों का कारण है और सब कारणों का परिणाम है ?

वह क्या शक्ति है, जो मौत और जिन्दगी को एक करती है और फिर उनमें से एक ऐसा स्वप्न पैदा करती है, जो जीवन से भी अधिक विचित्र और मौत से भी अधिक गहरा है ?

मेरे भाइयो, मुझे बताओ कि जब तुम्हारी आत्मा प्रेम-भरी गोरी-गोरी अंगुलियों का स्पर्श अनुभव करेगी तो तुममें से कौन है, जो जीवन के इस रंगीन और मधुर स्वप्न से जाग नहीं उठेगा ?

तुममें से कौन है, जो अपने मां-बाप और जन्मस्थान को नहीं छोड़ देगा, जब तुम्हारी प्रेयसी तुम्हें अपनी ओर बुलायेगी ?

तुममें से कौन है, जो अपनी उस प्रेयसी की खोज में मरुस्थलों को पार नहीं करेगा, पर्वतों की चोटियों पर नहीं चढ़ जायगा और समुद्रों को नही लांघेगा, जिसके लिए तुम्हारी आत्मा बेचैन है ?

वह कौन-सा नवयुवक है, जो संसार के अन्तिम कोने तक नहीं पहुच जायगा, जब वहां एक ऐसी मोहिनी सुन्दरी उसकी प्रतीक्षा कर रही हो, जिसकी सांस, आवाज और स्पर्श में एक मादक रस और तृप्ति हो ?

कौन ऐसा मनुष्य है, जो अपनी आत्मा की आहुति उस देवता के सामने नहीं डालेगा, जो इसकी इच्छाओं का ध्यान रखता है और इसकी विनतियों को पूरा करता है ?

... ...

अभी कल ही मैं मन्दिर के द्वार पर खड़ा था और पास से जानेवाले सभी व्यक्तियों से प्रेम के रहस्यों और लाभों के बारे में पूछ रहा था ।

एक अधेड़ आयु का व्यक्ति वहां से गुजरा। उसकी शक्ति क्षीण हो चली थी और उसकी त्यौरियां चढ़ी हुई थीं। वह कहने लगा :

"प्रेम एक जन्मजात दुर्बलता है, जिसे हमने आदि-पुरुष से उत्तराधिकार में प्राप्त किया है।"

फिर एक नवयुवक, जिसका शरीर और भुजाएं सुदृढ़ थीं, यह कहते हुए आया :

"प्रेम एक ऐसा दृढ़ निश्चय है, जो हमारी आत्मा के साथ रहता है, और जो वर्तमान को अतीत तथा भावी युगों से जोड़ता है।"

उसके पीछे एक शोकातुर स्त्री आहें भरती हुई गुजरी और कहने लगी :

"प्रेम वह घातक विष है, जिसे भयंकर और काले-काले भुजधर पाताल की गहराइयों में से सारे लोक में फैलाते हैं, जिससे वह विष ओस-कणों के रूप में प्यासी आत्माओं के ऊपर पड़ता है। कुछ समय के लिए आत्मा उसके प्रभाव से नशे में मस्त हो जाती है और फिर वह कुछ देर संभलकर सदा के लिए नष्ट हो जाती है।"

पर एक फूल के समान गुलाबी चेहरेवाली सुन्दर लड़की अपने मुस्कराते हुए होठों से कहने लगी :

"देखो, प्रेम अमृत है, जिसे प्रभात की वधुएं बलवान पुरुषों के लिए बरसाती हैं, जिससे वे रात में आभायुक्त बन उठें और दिन में आनन्द का भोग करें।"

उसके बाद एक और आदमी काले वस्त्र पहने हुए आया।

उसकी लम्बी दाढ़ी उसकी छाती पर बिखरी हुई थी। उसने बड़ी तीव्रता के साथ कहा :

"प्रेम एक मूर्खता है, जो जवानी के प्रभात के साथ-साथ प्रकट होती है और उसके संध्याकाल के साथ विदा हो जाती है।"

उसके पीछे एक और आदमी आया, जिसका चेहरा तेज-पूर्ण और शांत था। उसने बड़े प्रसन्न मुख से कहा :

"प्रेम एक दैवी ज्ञान है, जो हमारे अंतरंग और बाहर की आंखों को प्रकाश प्रदान करता है, जिससे हम समस्त वस्तुओं को देवताओं के समान देखने लग जायं।"

फिर एक अंधा आदमी धरती पर पुरानी लाठी से अपना मार्ग ढूंढ़ता हुआ आया। वह रोती हुई आवाज में कहने लगा :

"प्रेम एक गहरी धुध है, जो आत्मा को ढंक देती है और जीवन के दृश्यों पर परदा डाल देती है, जिससे वह आत्मा पथरीली चट्टानों में भटककर अपनी इच्छाओं की प्रतिच्छाया के सिवा कुछ भी नहीं देखती और सूनी तथा निर्जन घाटियों में अपनी आवाज की प्रतिध्वनि के सिवा कुछ नहीं सुनती।"

फिर एक नवयुवक वीणा बजाता और यह गाता हुआ आया :

"प्रेम एक स्वर्गिक ज्योति है, जो सूक्ष्मग्राही आत्मा के अंतरंग से चमककर अपने आस-पास की समस्त वस्तुओं को प्रकाशमान कर देती है, जिससे यह आत्मा समस्त लोकों का दृश्य इस प्रकार देखे, मानो उसके सामने हरे-भरे मैदानों में एक जलूस जा रहा है और यह देखे कि जीवन एक जागरण और दूसरे

जागरण के बीच सौंदर्य का एक स्वप्न है।"

इस नवयुवक के बाद एक बूढ़ा आदमी लड़खड़ाता और कांपता हुआ आया कहने लगा :

"प्रेम एक दुखी शरीर की वह विश्रांति है, जो उसे कब्र में प्राप्त होती है और आत्मा का वह आश्रय है, जो उसे अनंत की तीव्रता में मिलता है।"

फिर पांच वर्ष का एक बालक आया और उसने तेजी से दौड़ते हुए ऊंची आवाज में कहा :

"प्रेम मेरा बाप है और प्रेम मेरी मां है, और मेरे मां-बाप के सिवा कोई नहीं जानता कि प्रेम क्या है।"

... ...

और अब दिन समाप्त हो चुका था और सब लोग मन्दिर के सामने से गुजर चुके थे। इनमें से हरएक ने प्रेम के सम्बन्ध में कुछ-न-कुछ कहा था और प्रत्येक शब्द में अपनी-अपनी भावनाओं और इच्छाओं को प्रकट किया था और जीवन के गुप्त रहस्यों को खोला था।

जब संध्या पूरी तरह से आ गई और सभी लोग अपने-अपने घर चले गये और सब ओर सन्नाटा छा गया, तो मैंने मन्दिर में यह आवाज सुनी, "जीवन दो चीजों का नाम है—एक जमी हुई नदी और दूसरी धधकती हुई ज्वाला। धधकती हुई ज्वाला ही प्रेम है।"

तभी मैंने भी मन्दिर में प्रवेश किया और भूमि पर घुटने

टेककर अपने हृदय की गहराइयों से प्रार्थना की, "हे प्रभो, मुझे इस धधकती हुई ज्वाला का भोग बना और हे प्रभु, मुझे इस पवित्र अग्नि की आहुति बना।"

"एवमस्तु।"

२. दैवी वाणी

जब रात गहरी हो गई और नींद ने अपनी चादर सारे संसार पर फैला दी, मैं अपने बिस्तर से उठकर समुद्रतट की ओर यह कहते हुए चला :

"समुद्र कभी नहीं सोता और उसका जागरण व्याकुल और निद्राहीन आत्माओं को सन्तोष और ढांढस देता है।"

जब मैं समुद्र-तट पर पहुंचा तो कुहर पहले ही पर्वत की चोटियों से नीचे उतर चुका था और संसार को इस प्रकार ढंक चुका था, जिस प्रकार परदा किसी कुमारी के मुख को शोभित करता है।

मैं वहां खड़ा लहरों का दृश्य देखता रहा, उनके गीतों को सुनता रहा और उस महान शक्ति के बारे में विचार करता रहा, जो उनके पीछे काम करती रही है। वह शक्ति तूफान के साथ-साथ चलती है और ज्वालामुखी पर्वतों के फटने के साथ क्रुद्ध होती है। वह मुस्कराते फूलों के साथ मुस्कराती है और हँसती है और कलकल निनाद करती जल-धाराओं के साथ सुरीला संगीत पैदा करती है।

कुछ देर के बाद मैं दूसरी ओर मुड़ा तो देखता क्या हूं पास ही पहाड़ी पर तीन आकृतियां बैठी हैं। मैंने देखा, कुहरे ने उन्हें अपने आंचल में छिपा रक्खा है, फिर भी वे अदृश्य नहीं हैं।

मैं एक अज्ञात शक्ति से खिंचा हुआ उसी पहाड़ी की ओर चल दिया, जिसपर वे आकृतियां बैठी थीं।

कुछ कदम दूर खड़े होकर मैं उनको घूर-घूरकर देखने लगा, क्योंकि इस स्थान में जादू-सा था, जिसमें मेरा उद्देश्य स्पष्ट रूप धारण कर चुका था और जिसने मेरी कल्पनाओं में तीव्रता पैदा करदी थी।

उसी समय उन तीन आकृतियों में से एक उठी और ऐसी आवाज़ के साथ, जो कि समुद्र की गहराइयों में से उठती हुई मालूम होती थी, वह बोली :

"प्रेम के बिना जीवन एक ऐसे वृक्ष के समान है, जिसपर न कोई फूल हो, न फल। सौंदर्य के बिना प्रेम ऐसे फूल के जैसा है, जिसमें सुगन्धि न हो और ऐसे फल के समान है, जिसमें बीज न हों।

"जीवन, प्रेम और सौंदर्य एक ही तत्त्व के तीन गुण हैं, जो स्वतंत्र और असीम हैं और जो न बदलते हैं और न अलग होते हैं।"

यह कहकर वह अपने स्थान पर बैठ गई।

फिर दूसरी आकृति उठी और बड़े वेग से बहती हुई नदी की लहरों के शोर जैसी आवाज में कहने लगी :

"विद्रोह के बिना जीवन ऐसा है, जैसे वसंत के बिना ऋतुएं और सत्य के बिना विद्रोह ऐसा है, जैसे सूखे और बंजर मरुस्थल में जल-स्रोत।

"जीवन, विद्रोह और सत्य एक ही तत्त्व के तीन गुण हैं, उनमें न परिवर्तन होता है, न जुदाई।"

यह कहकर वह भी अपने स्थान पर बैठ गई। फिर तीसरी आकृति उठी और बिजली की कड़कती हुई आवाज़ में कहने लगी :

"स्वतंत्रता के बिना जीवन आत्माहीन शरीर के समान है और विचार-शीलता के बिना स्वतंत्रता एक भ्रांत आत्मा के जैसी है।

"जीवन, स्वतंत्रता और विचार-शीलता एक ही अमर तत्त्व के तीन गुण हैं, जो न लुप्त होते हैं और न नष्ट।"

फिर वे तीनों आकृतियां उठीं और गौरव तथा भय के स्वर में कहने लगीं :

"प्रेम और जो कुछ उससे उत्पन्न होता है, क्रांति और जो कुछ वह रचती है और स्वतन्त्रता और जो कुछ उससे पैदा होता है, ये परमात्मा के तीन रूप हैं और परमात्मा सीमित और चेतन संसार का अनंत मन है।"

फिर वहां निस्तब्धता छा गई, जिसमें अदृश्य पंखों की फड़फड़ाहट और पारलौकिक शरीरों की थरथराहट भरी हुई थी।

और मैंने अपनी आंखें बन्द कर लीं। जो बातें मैंने सुनी थीं, उनकी प्रतिध्वनि मेरे कानों में गूंजने लगी।

पर जब मैंने अपनी आंखें खोलीं तो मैंने कुहर की चादर में लिपटे समुद्र के सिवा वहां कुछ न देखा। मैं उस पहाड़ी के पास गया और वहां भी मुझे आकाश की ओर उठते हुए धुएं के सिवा और कुछ भी दिखाई न दिया।

३. आत्मा

परमेश्वर ने आत्मा का निर्माण किया और उसे सुन्दर बनाया।

उसने इसे प्रभात की मन्द वायु की सुकोमलता, फूलों की महक और चांदनी रात की मनोरमता प्रदान की।

उसने उसे आनन्द से छलछलाता प्याला दिया और कहा, "तुम इस प्याले के आनन्द को उस समय तक न पीना जबतक कि तुम अतीत को भूल न जाओ और भविष्य से निश्चिन्त न हो जाओ।"

उसने इसे दुःख से भरा प्याला भी दिया और कहा, "इसे पियो, जिससे तुम आनन्द की यथार्थता को समझ सको।"

फिर ईश्वर ने आत्मा में ऐसा प्रेम उत्पन्न किया, जो सन्तोष के पहले क्षण के साथ ही लुप्त हो जानेवाला था और ऐसी मधुरता भी दी, जो दंभ के पहले शब्द के साथ ही विदा हो जानेवाली थी।

उसने इसके सत्य-मार्ग पर चलने में पथप्रदर्शक का काम करने के लिए दैवी चिन्ह बनाया। उसने इसके अंतरंग की गहराइयों में ऐसी दृष्टि दी, जिससे वह अदृष्ट को देख सके।

उसने इसे वह कल्पना-शक्ति प्रदान की, जो छाया और चलती-फिरती आकृतियों के साथ नदी के प्रवाह के समान संचार करनेवाली थी।

उसने इसे इच्छाओं के वे परिधान पहनाये, जिन्हें देवताओं ने इन्द्रधनुष से बुना था।

उसने आत्मा में आश्चर्य का वह अंधकार पैदा किया, जो प्रकाश की छाया है।

परमात्मा ने क्रोध की भट्टी में से आग, अज्ञान के मरुस्थल से चलनेवाली पवन और आत्म-पूरित सागर तट से बालू लेकर युगों की चरण-रज के साथ मिलाकर इन्सान को बनाया

उसने इन्सान को वह अन्धी शक्ति दी, जो भावनाओं के आवेश के क्षणों में ज्वाला में कूद पड़ती है और इच्छाओं के सामने झुक जाती है।

उसने उसे वह जीवन दिया, जो मौत की परछांई है।

तब देवाधिदेव मुस्कराया और रोया और उसे एक ऐसे प्रेम का अनुभव हुआ, जिसकी न कोई सीमा है, न अन्त।

इस प्रकार उसने मानव और उसकी आत्मा में एकत्व उत्पन्न कर दिया।

४. रात का गीत

रात स्तब्ध हो गई है और स्वप्न मौन में छिप गये हैं।

चन्द्रमा उदय हो रहा है और दिन को देखने के लिए उसके आंखें हैं।

ए खेतों की बेटी, आओ, हम अंगूरों के कुंजों में चलें, जहां प्रेमीजन मिलते हैं, क्योंकि, संभव है, वहां हम भी प्रेम-रूपी अंगूरी शराब से अपनी कामनाओं की तृष्णा को बुझा सकें।

सुनो, बुलबुल घाटियों में अपने मधुर गीत गा रही है, जिन्हें पहाड़ियों ने अपने हरे-भरे पोदीने की सुगन्धि से भर दिया है।

प्रिये, डरो मत, क्योंकि तारे हमारे मिलन के रहस्य को गुप्त रक्खेंगे और रात का हल्का-हल्का कुहरा हमारे आलिंगनों को अपने आंचल में छुपा लेगा।

डरो मत, इन्द्राणी अपनी मायाविनी सेज पर प्रेम के नशे में मस्त सो रही है। वह अप्सराओं की आंखों से भली प्रकार ओझल है।

और यदि इन्द्र भी पास से गुज़रे तो प्रेम उसको भी वापस लौटा देगा, क्योंकि वह भी मेरे समान क्या एक प्रेमी नहीं है ? और क्या वह उस बात को प्रकट कर देगा, जिससे स्वयं उसका हृदय पीड़ित है ?

५. मेरी आत्मा ने मुझसे कहा

मेरी आत्मा मुझसे बोली और उसने उन सब वस्तुओं को, जिनसे दूसरे आदमी घृणा करते हैं, प्रेमकरने का परामर्श दिया और उन लोगों को मित्र बनाने की सलाह दी, जिनको दूसरे लोग बदनाम करते हैं।

मेरी आत्मा ने मुझे परामर्श दिया और प्रकट कर दिया कि प्रेम केवल प्रेमी को ही प्रतिष्ठित नहीं करता, वरन जिसे प्रेम किया जाता है, उसको भी महानता प्रदान करते है। इससे पहले प्रेम मेरे लिए दो समीपवर्ती फूलों के बीच एक जाले के धागे के सामान था, पर अब वह एक ऐसा प्रभामंडल बन गया है, जिसका न आदि है, न अन्त, और जो हो चुका उसको आवृत्त किये हुए है और जो भविष्य में होगा, उसको आलिंगन में बांधने के लिए सदा-सदा के लिए क्षुब्ध रहेगा

... ...

मेरी आत्मा ने मुझे परामर्श दिया और मुझे रूप-रंग से ढंके सौन्दर्य को देखना सिखाया। मेरी आत्मा ने मुझे उन कुरूप समझी जानेवाली सब वस्तुओं को तबतक निरन्तर देखने का आदेश दिया, जबतक कि वे सुन्दर न दीखने लगें। पहले सौन्दर्य मुझे धुएं के स्तम्भों के बीच झिलमिलाते-दीपकों के समान दिखाई देता था, पर अब धुआ उड़कर समप्त हो गया और मैं सिवा दीप-शिखा के और कुछ नहीं देखता।

... ...

मेरी आत्मा ने मुझसे कहा और यह आदेश दिया कि मैं उन स्वरों को सुनूं, जो न तो वाणी से फूटते हैं और न कंठ से। उस दिन से पहले मैं अस्पष्ट-सा सुनता था और सिवा चिल्लाहट और शोर के मुझे कुछ नहीं सुनाई देता था। पर अब मैंने मौन को भी सुनना सीख लिया है। अब मैं इसके तारों में से युग-युग के गीत सुन सकता हूं, जो अंतरिक्ष की प्रार्थनाएं उच्चारण करते हैं और अनंत काल के रहस्यों को प्रकट करते हैं।

... ...

मेरी आत्मा ने मुझसे कहा और मुझे अपनी प्यास को उस मदिरा से बुझाने का परामर्श दिया, जिसे प्यालों में नहीं ढाला जा सकता है, जिसे हाथ से नहीं उठाया जा सकता है, और न होठों से छुआ जा सकता है। अबसे पहले मेरी प्यास राख से ढंकी हुई उस धुधली चिनगारी के समान थी, जिसे किसी भी प्रपात की एक बूंद से बुझाया जा सकता था, पर अब मेरी तीव्र इच्छा मेरा प्याला बन चुकी है, प्रेम मेरी मदिरा हो गया है और एकान्त मेरा आनन्द।

... ...

मेरी आत्मा ने मुझसे कहा और मुझे अदृश्य को ढूंढ़ने का आदेश दिया। मेरी आत्मा ने मुझे बताया कि जिस चीज को हम प्राप्त कर सकते हैं, वही तो वह वस्तु है, जिसे हम चाहते हैं। इससे पहले मैं शीत काल में गर्मी और गर्मी के दिनों में ठंडक देनेवाली मंद पवन से संतुष्ट हो जाता था। अब मेरी अंगु-

लियां कुहर के समान बन गई हैं और वे उस सबको गिरा रही हैं, जिसे वे अबतक थामे हुए थीं, जिससे वे उस अदृश्य में मिल जायं, जिसकी मैं अब इच्छा करता हूं।

...		...		...

मेरी आत्मा ने मुझसे कहा और मुझे निमंत्रित किया कि मैं उस पौधे की सुगन्धि को सूंघूं, जिसके न जड़ें हैं, न डाली, न फूल और जिसे किसी आंख ने नहीं देखा है। पर आत्मा के मुझसे इस प्रकार कहने से पहले मैं उद्यान के सुन्दर-सुन्दर सुगंधित फूलों, मधुर-मधुर सुगंधिदायक बूटियों और धूपदानों में सुगंधि ढूंढ़ता था; पर अब मैं केवल एक ही ऐसी सुगंधि से परिचित हूं, जिसे शायद जलाया न जा सके। अब मैं ऐसी वायु में सांस लेता हूं, जो कि संसार के समस्त उद्यानों और लोक की समस्त वायु से अधिक सुगंधिपूर्ण है।

...		...		...

मेरी आत्मा ने मुझसे कहा और मुझे यह कहने की आज्ञा दी कि जब कभी कोई अपरिचित और साहसी व्यक्ति मुझे पुकारे तो मैं कहूं, "मैं आता हूं।" इससे पहले मैंने केवल हाट में सौदा बेचनेवालों की आवाज़ के सिवा न और किसीको उत्तर दिया था और न मैं भली-भांति जाने-बूझे और चले हुए मार्गों के सिवा और किसी मार्ग पर चला था। पर अब परिचित मुझे अपरिचित को ढूंढ़ने में सवारी का काम देता है और मार्ग एक ऐसी सीढ़ी बन गया है, जिसके द्वारा मैं खतरनाक शिखरों पर चढ़ सकूं।

...		...		...

मेरी आत्मा ने मुझसे कहा और मुझे सलाह दी कि मैं समय को इस कहावत से जांचूं—"बीता हुआ कल था और आनेवाला कल होगा।" इस समय से पहले मै अतीत को एक ऐसा बीता हुआ युग समझता था, जो नष्ट हो गया है और जिसे भूल जाना होगा और मैं भविष्य को ऐसा युग समझता था, जिसे में प्राप्त नहीं कर सकूंगा। पर अब मैंने यह सीखा है कि इस संक्षिप्त से वर्तमान काल में ही वह सब काल और वह सबकुछ है, जो इस थोड़े-से समय में है, और इसीमें वह प्राप्त होता है और हमारे सामने आता है।

... ...

मेरी आत्मा ने मुझसे कहा और मुझपर यह प्रकट किया कि मैं "यहां, वहां और सब कहीं" शब्द द्वारा अंतरिक्ष से बंधा हुआ नहीं हूं। अबतक मैं अपनी पहाड़ी पर खड़ा था और दूसरी पहाड़ियां मुझे दूर, बहुत दूर, मालूम होती थीं, पर अब मैं जानता हूं, जिस पहाड़ी पर मैं खड़ा हूं, इसीमें सारी पहाड़ियां निहित हैं और जिस घाटी से में गुजरता हूं, उसीमें सब घाटियां समाई हुई हैं।

... ...

मेरी आत्मा ने मुझे सलाह दी और कहा कि जब दूसरे आदमी सोते हों तो मैं उनकी देखरेख रक्खूं और जब दूसरे आदमी जागते हों, तब मैं अपने बिस्तर में सो जाऊं, क्योंकि सारी उम्र मैं इन लोगों के स्वप्नों को नहीं देख सका और न वे मेरे स्वप्नों को। पर अब मैं दिन के समय अपने स्वप्नों में उड़ता हूं और जब दूसरे आदमी निद्रा-मग्न होते हैं, तब मैं अपने

स्वप्नों को रात की निःस्तब्धता में स्वतंत्र देखता हूं और उनकी स्वतंत्रता पर प्रसन्न होता हूं।

... ...

मेरी आत्मा ने मुझसे कहा और चेतावनी दी कि कहीं ऐसा न हो कि मैं अति प्रशंसा से फूल उठूं और निंदा के भय से चिंतित हो जाऊं। इस दिन तक मुझे स्वयं अपने कामों के मूल्य के बारे में सन्देह था। पर अब मैंने यह सीख लिया है कि वसन्त ऋतु में वृक्षों पर फूल आते हैं और गर्मियों में फल, और ये ही वृक्ष पतझड़ की ऋतु में अपने पत्तों को झाड़-कर शीत ऋतु में सर्वथा नग्न हो जाते हैं। इन्हें न उल्लास होता है, न भय और न लज्जा।

... ...

मेरी आत्मा ने कहा और मुझे यह विश्वास दिलाया कि मै न तो बौने से अधिक ऊंचा हूं और न देवों से छोटा। इससे पहले मुझे मनुष्य-जाति के दो मानव-रूप दिखाई देते थे। एक तो दुर्बल, जिसपर मैं तिरस्कार के भाव से हँसता था या उनपर तरस खाता था और दूसरे शक्तिशाली इंसान, जिनका या तो मैं अनुसरण करता था या जिनके विरुद्ध विद्रोह का झंडा उठाता था। पर अब मैं जानता हूं कि मैं भी उसी धूल से बना हूं, जिससे दूसरे इंसानों की रचना हुई है। मेरे शरीर की रचना में भी वही तत्त्व हैं, जो उनके शरीर में हैं और मेरी अन्तरात्मा ही उनकी अन्तरात्मा है; मेरा संघर्ष उनका संघर्ष है और मेरी यात्रा उनकी यात्रा है। यदि वे नियमों का उल्लंघन करते हैं तो मैं भी करता हूं। यदि वे

अच्छे काम करते हैं तो उनके अच्छे कामों में भी मेरा साझा होता है। यदि वे उठते हैं तो मैं भी उनके साथ उठता हूं और यदि वे पीछे रहते हैं तो मैं भी उनके साथ रहने के लिए पीछे रहता हूं।

... ...

मेरी आत्मा ने मुझसे कहा और मुझे यह देखने की सीख दी कि जिस प्रकाश को मैं लेकर चलता हूं, वह मेरा नहीं है, और मेरे गीतों का जन्म मेरे अंतरंग में नहीं हुआ, क्योंकि यद्यपि मैं प्रकाश के साथ चल रहा हूं, मैं स्वयं प्रकाश नहीं हूं और यद्यपि मैं कसे हुए तारोंवाली वीणा हूं, तो भी मैं वीणा को बजानेवाला नहीं हूं।

... ...

मेरे भाई, मेरी आत्मा ने मुझसे कहा और मुझे प्रकाश दिया। तुम्हारी आत्मा ने भी तुमसे कहा और तुम्हें प्रकाश दिया, क्योंकि तुम भी मेरे ही समान हो और हममें आपस में कोई भेद नहीं है, सिवा इसके कि जो कुछ मैंने अंतरंग में सुना है, मैं उसे शब्दों में कह देता हूं और तुम अपने अंतरंग की बात को सम्भालकर रखते हो और तुम्हारा मौन उतना ही अच्छा है, जितना कि मेरा अधिक बोलना।

६. मेरा जन्म-दिन

जिस दिन मेरी मां ने मुझे जन्म दिया, उस दिन, आज से पच्चीस वर्ष पहले, निस्तब्धता ने मुझे जीवन के उन विशाल हाथों में सौंप दिया, जो संघर्ष और लड़ाई से भरे हुए हैं।

देखो, मैंने पच्चीस बार सूरज के गिर्द चक्कर लगाया है। चन्द्रमा ने मेरे गिर्द कितनी बार चक्कर लगाये हैं, मुझे मालूम नहीं। पर मैं यह जानता हूं कि मैंने अभी तक प्रकाश का भेद नहीं पाया और न मैं अंधकार के रहस्यों को समझ पाया हूं।

पच्चीस बार मै पृथ्वी, चांद, सूरज और तारों के साथ विश्व के चारों ओर घूमा हूं।

देखो, अब मेरी आत्मा सौर-मंडल के नक्षत्रों के नाम लेती है—ठीक इस प्रकार, जिस प्रकार समुद्र की थाहों को उसकी लहरें गुजाती हैं, क्योंकि आत्मा भी विश्व में एक लहर के समान विद्यमान है, पर वह अपनी शक्ति से अपरिचित है।

आत्मा पंचम और मध्यम स्वरों में अपना विश्वव्यापी राग अलापती है, पर वह अपनी एकलयता की पूर्णता को प्राप्त नहीं करती।

पच्चीस वर्ष हुए, समय ने मेरा नाम इस विचित्र और

भयंकर जीवन की पुस्तक में लिख दिया था।

देखो, मैं केवल एक शब्द-मात्र हूं, जो कभी कुछ भी सूचित नहीं करता और कभी बहुत-सी बातें प्रकट करता है।

हर वर्ष उस दिन मेरी आत्मा में कैसे-कैसे विचार और स्मृतियां इकट्ठी होती हैं!

बीते हुए दिनों का जलूस और रात की अस्पष्ट आकृतियों का स्वांग मेरे सामने आकर रुक जाते हैं, फिर कोई वस्तु उन्हें समेटकर ले जातो है, जैसे वायु क्षितिज से बादलों को उड़ाकर ले जाती है।

वे मेरे घर के अन्धकार में इस प्रकार अदृश्य हो जाते हैं, जिस तरह नदियों के गीत सुनसान और दूरस्थ घाटियों में खो जाते हैं।

उस दिन हर वर्ष वे सभी आत्माएं संसार के दूरवर्ती कोनों से मुझे ढूंढ़ती हुई और दुखद स्मृतियों के गीत गाती हुई मेरे पास आती हैं, जिन्होंने मेरी आत्मा को आकृति प्रदान करने में योग दिया है। फिर वे विदा हो जाती हैं और इस जीवन के आकार के पीछे इस प्रकार छिप जाती हैं, जिस प्रकार पक्षी आकाश से खलियान में उतरते हैं और वहां चुगने को कोई दाना न पाकर थोड़ी देर वहीं फड़फड़ाकर किसी और स्थान की खोज में उड़ जाते हैं।

... ...

उस दिन सदा मेरे बीते हुए जीवन का आशय मेरी आंखों के सामने धुंधले दर्पणों के समान आ जाता है, जिसमें मैं कुछ

देर देखता हूं, पर जहां वर्षों के पीले और मुरदा चेहरों के सिवा कुछ भी दृष्टिगोचर नहीं होता और चिरकाल को भूली हुई आशाओं और खोए हुए स्वप्नों के मुरझाए झुर्रीदार चेहरों के अतिरिक्त और कुछ नहीं दीखता।

मैं एक बार फिर उन दर्पणों को देखता हूं और उनमें केवल अपना निश्चल चेहरा मुझे दिखाई देता है। मैं उनमें देखता हूं, पर मुझे सिवा शोक के और कुछ दिखाई नहीं देता। मैं इस शोक से प्रश्न करता हूं, पर देखता हूं कि उसके वाणी नहीं है। फिर भी मेरा विचार है कि यदि शोक कुछ कह सकता तो वह हर्ष से भी मधुर शब्द ही कहता।

पच्चीस वर्ष तक मैंने बहुत प्रेम किया है और कई बार मैंने उससे प्रेम किया है, जिससे दूसरे आदमी घृणा करते हैं। पर जिन वस्तुओं को मैं बचपन में प्रेम करता था, उन्हें अब भी प्रेम करता हूं और जिन्हें अब प्रेम करता हूं, उन्हें जीवन के अन्त तक प्रेम करूंगा, क्योंकि प्रेम ही मेरा सर्वस्व है और कोई भी शक्ति मुझे उससे वंचित नहीं कर सकती।

कई बार मैंने मौत से प्रेम किया है, उसे प्यारे-प्यारे नामों से पुकारा है और खुले रूप में तथा चुपचाप इसके बारे में प्रेम-भरे शब्दों में बातें की है। पर यद्यपि न तो मैंने मौत की सौगंधों को भुलाया है और न उन्हें तोड़ा है, फिर भी मैंने जीवन से भी प्रेम करना सीख लिया है, क्योंकि मौत और जीवन, सौन्दर्य और आनन्द की दृष्टि से मेरे लिए बराबर

हैं। उन्होंने मेरी आशाओं और इच्छाओं की पुष्टि और वृद्धि में समान योग दिया है और मेरे प्रेम और कोमलता को समान रूप से बांटा है।

मैंने स्वतन्त्रता से भी प्रेम किया है, ठीक उसी प्रकार जैसे जीवन और मौत से। और ज्यों-ज्यों मेरा प्रेम पुष्ट हुआ, त्यों-त्यों इंसानी दासता-सम्बन्धी मेरा यह ज्ञान भी बढ़ता गया कि वह अत्याचार और तिरस्कार की जंजीरों में किस प्रकार जकड़ा हुआ है। उसी क्षण मैंने इन दासों को अंधकारपूर्ण युग की बनी हुई उन मूर्तियों के सामने आत्म-समर्पण करते देखा, जिनका पोषण अज्ञान में हुआ है और जो दासों के होठों से चमकाये गए हैं। पर मैंने इन दासों से वैसे ही प्रेम किया, जैसे स्वाधीनता को करता हूं और उनपर तरस भी आया, क्योंकि वे दृष्टिहीन हैं। वे नीच और खून के प्यासे पशुओं के जबड़ों को चाटते हैं और यह नहीं देखते कि वे क्या कर रहे हैं। वे भयानक सांपों का विष चूसते हैं, पर अनुभव नहीं करते कि क्या कर रहे हैं। वे अपने हाथों से अपनी कब्रें खोदते हैं और नहीं जानते कि वे क्या कर रहे हैं।

मैंने स्वतन्त्रता को अन्य वस्तुओं की अपेक्षा अधिक प्रेम किया है, क्योंकि स्वतन्त्रता, मेरी दृष्टि में, एक कुमारी के समान है, जो दुःख और अकेलेपन के कारण इतनी दुर्बल और शक्तिहीन बन गई है कि अंत में वह एक भूतनी के समान सुनसान गली-कूचों के घरों में फिरती रहती है, और जब वह पास से गुजरनेवालों को पुकारती है, तो न वे उसकी ओर

देखते हैं और न उसकी बात ही सुनते है ।

इन पच्चीस वर्षों में दूसरे लोगों के समान मैंने आनन्द-सुख से भी प्रेम किया है । मैंने भी उनकी तरह सवेरे उठकर आनन्द को खोजा है, पर मैंने उनके रास्तों में कभी उसे नहीं पाया, न उनके महलों के पास के मार्गों के रेत में सुख का निशान ही देखा है और न मैंने उनके मन्दिरों की खिड़कियों में से आती हुई आनन्द की प्रतिध्वनि ही सुनी है ।

मैंने अकेले आनन्द को ढूंढ़ने का प्रयत्न किया । मैंने अपनी आत्मा को अपने कानों में यह कहते हुए सुना—

"आनन्द एक कुमारी है, जिसका जन्म और पालन-पोषण हृदय की धड़कनों में हुआ है । वह इसकी चहार-दीवारी से बाहर कभी नहीं आती ।"

पर मैंने जब अपने हृदय-पट को खोलकर आनन्द को ढूंढ़ा तो मैंने उसका दर्पण, बिस्तर और वस्त्र वहां पाये, पर उसको मैं वहां नहीं पा सका ।

मैंने मानव-जाति से प्रेम किया है । ओह, मैंने मनुष्यों से बहुत प्रेम किया है ।

मेरी सम्मति में इंसान तीन प्रकार के होते हैं । एक वे जो जीवन को कोसते हैं । दूसरे वे जो उसे आशीर्वाद देते हैं और तीसरे वे जो इसपर सोच-विचार करते हैं ।

मैं पहले प्रकार के इंसानों से उनकी दुःखी अवस्था, दूसरे प्रकार के इंसानों से उनकी शुभ-भावना और तीसरे

प्रकार के इंसानों से उनकी बुद्धिमत्ता के कारण प्रेम करता हूं।

... ...

इस तरह पच्चीस वर्ष बीत गये। इस तरह मेरे जीवन-प्रवाह में दिन और रात एक-दूसरे का पीछा करते हुए गुजर गये, जैसे कि हेमन्त काल की पवनों के सामने वृक्षों के पत्ते बिखरते हैं। और आज जब मैं बैठकर याद करता हूं जैसे कि हारा-थका पर्वतारोही शिखर से आधी दूर जाकर सोचता है, और मैं अपने दांये, बांये और पीछे की ओर देखता हूं तो कहीं भी मुझे वह निधि दिखाई नहीं देती, जिसके बारे में मैं अपना अधिकार जमाकर यह कह सकूं, "यह मेरी अपनी है।"

मुझे अपने जीवन की ऋतुओं तथा फसलों में सिवा ऐसे सफेद काग़ज़ों के, जिनपर काली स्याही से निशान लगे हैं और विचित्र तथा खंडित कनवास के, जो रेखाओं और रंगों से, सम तथा विषम रूप में भरे पड़े हैं, कुछ भी दिखाई नहीं देता। इन लेखों और चित्रों में मैंने उस सौन्दर्य और स्वतन्त्रता को छिपा दिया है, जिसकी मैंने कल्पना की है या जिसके स्वप्न देखे हैं, जैसे कि एक किसान अपने खेत की लीकों में बीज बोने जाता है और सायंकाल अपने हृदय में सैकड़ों आशाएं लेकर लौटता है और फसल की प्रतीक्षा करता है। परन्तु मैं? यद्यपि मैंने अपने हृदय के बीज खूब अच्छी तरह बोये हैं, तो भी न मैंने आशा की है और न प्रतीक्षा, और अब जबकि मैं अपने जीवन की ऋतु में पहुंच गया हूं, मुझे बीता हुआ युग

आहों तथा दुःखों की धुंध के पीछे छिपा हुआ मालूम होता है और भविष्य भूतकाल के पर्दे में से प्रकट होता दिखाई देता है।

मैं ठहरकर अपनी छोटी-सी खिड़की में से जीवन पर दृष्टि डालता हूं। मैं लोगों के चेहरे देखता हूं और उनकी आवाज को आकाश की ओर उठते हुए देखता हूं।

मेरा ध्यान गलियों में उनके पैरों की चाप की ओर जाता है और मैं उनकी आत्माओं के मिलन, उनकी इच्छाओं के उद्वेग और उनके हृदयों की उत्कंठाओं को देखता हूं।

मैं ठहरकर इस खिड़की में से बच्चों को हँसते-किलकारी मारते, एक-दूसरे पर धूल फेंकते, देखता हूं।

मैं लड़कों को अपने चेहरे ऊपर उठाये हुए देखता हूं, मानों वे यौवन की प्रशंसा में उन बादलों के किनारों पर लिखे गीत को पढ़ रहे हैं, जिनके किनारों पर सूर्य की देदीप्यमान किरणें पड़ रही हैं।

मैं नवयुवतियों को वृक्षों की टहनियों की तरह इधर-उधर झूमते, फूलों की तरह मुस्कराते और प्रेम तथा कोमल अभिलाषाओं से फड़कती हुई आंखों की कनखियों से नवयुवकों की ओर टकटकी लगाये देखता हूं।

मैं वृद्धजनों को अपनी लाठियों का सहारा लिये धरती पर आंखें गढ़ाये, झुकी हुई कमर के साथ धीरे-धीरे चलते देखता हूं, मानों इनकी बूढ़ी धुंधली आंखें धूल में खोये हुए चमकदार रत्नों को ढूंढ़ रही हैं।

मैं अपनी खिड़की के पास खड़ा हो जाता हूं और इन सब इंसानों और परछाइयों को नगर में चुपचाप इधर-उधर चलते और रेंगते देखता हूं।

फिर मैं नगर से दूर सुनसान निर्जन स्थानों की ओर निगाह डालता हूं और उसके भयानक सौन्दर्य, मुखर मौन, उसके ऊंचे-ऊंचे टीलों, छोटी-छोटी घाटियों, फले-फूले वृक्षों, कम्पायमान घास, सुगन्ध-भरे फूलों, कलकल करती नदियों, गाते हुए जंगली पक्षियों और उसकी चहल-पहलवाली चहचहाती जिन्दगी को देखता हूं।

मैं निर्जनता से परे झांककर देखता हूं तो वहां मुझे समुद्र गहरे आश्चर्य, रहस्यपूर्ण भेद और अपनी छिपी निधियों-सहित दिखाई पड़ता है। मैं इसके चेहरे पर वे सब लक्षण देखता हूं, जो क्षुब्ध, तीव्र और फेनिल जल पर प्रकट होते हैं। और मैं वे तुषार भी देखता हूं, जो इससे उठते हैं और वे वाष्पकण भी देखता हूं, जो आकाश से नीचे उतरते हैं।

मैं समुद्र से भी परे आंख उठाकर देखता हूं तो मुझे अंतरिक्ष की अनंतता, गतिशील संसार, चमकते हुए नक्षत्रों के मण्डल, चांद-सूरज, स्थिर या गतिशील तारे दिखाई देते हैं। मैं उन शक्तियों को सामने देखता हूं, जो सदा एक-दूसरे को खींचती या विरोध से पीछे धकेलती हैं। मैं तत्वों को संघर्ष, रचना और परिवर्तन करते देखता हूं। पर इसके साथ-साथ यह भी देखता हूं कि विश्व के सभी तत्व सनातन नियमों में बंधे हैं।

इन वस्तुओं को अपनी खिड़की में से देखते हुए मैं विचार-मग्न हो जाता हूं और अपने जीवन के पच्चीस वर्षों को भूल जाता हूं। मैं उन शताब्दियों को भी भूल जाता हूं, जो इनसे पहले बीत चुकी हैं और इनके पश्चात आनेवाले युगों को भी भूल जाता हूं।

तब मुझे अपना जीवन अपनी समस्त अभिव्यक्तियों और रहस्यों के साथ एक बालक की सिसकी-सी मालूम होता है, जो अनंत गहराइयों और ऊंचाइयों के बीच शून्य में कांपती है।

तो भी यह अणु, यह अहं, जिसे मैं 'मैं' कहता हूं, हर समय एक उपद्रव और शोर करता रहता है, यह अपने पंखों को विशाल आकाश की ओर उठाता है अपने हाथों को संसार के समस्त कोनों तक फैलाता है और इसका शरीर उस काल की नोक पर संतुलित खड़ा है, जिसने इसे चेतन जीवन प्रदान किया है।

फिर उस परम पवित्र स्थान से, जहां यह जीवित चिनगारी निवास करती है, एक आवाज़ उठती है और पुकारकर कहती है :

"ए जीवन, तुझे शान्ति प्राप्त हो।

"ए जाग्रति, तुझे शान्ति प्राप्त हो।

"ए आत्म-बोध, तुझे शान्ति प्राप्त हो।

"ए दिन, तुझे शान्ति प्राप्त हो, जिसका प्रकाश-पुंज धरती के अंधकार को घेरे हुए है।

"ए रात, तुझे शांति प्राप्त हो, जिसका अंधकार स्वर्ग के प्रकाश को प्रकट करता है ।

"ऋतुओ, तुम्हें शांति प्राप्त हो ।

"ए वसंत, तुझे शांति मिले, जो धरती के यौवन को फिर से नवीनता प्रदान करता है ।

"ए ग्रीष्म, तुझे शांति प्राप्त हो, जो सूरज के तेज में वृद्धि करता है ।

"ए हेमन्त, तुझे शांति मिले, जो मेहनत के फल और कठोर परिश्रम की फसल हमें देता है ।

"ए शीत ऋतु, तुझे शांति मिले, जो प्रकृति की नष्ट शक्तियों को तूफानों के द्वारा फिर से प्रदान करती है ।

"ए वर्षो, तुम्हें शान्ति मिले, क्योंकि तुम उन बातों को प्रकट करते हो, जिनको सालों ने छुपा रक्खा है ।

"ए युगो, तुम्हें शांति प्राप्त हो, क्योंकि तुम उसकी फिर से रचना करते हो, जिसको शताब्दियों ने नष्ट कर दिया है ।

"ए समय, तुझे शांति मिले, जो हमारे साथ चलकर दिन को पूर्ण करता हैं ।

"ए आत्मा, तुझे शांति मिले, क्योंकि तू जीवन की बागडोर को बड़ी कुशलता से थामकर उसकी रक्षा करती है, जिसको सूर्य हमारी दृष्टि से छिपाये हुए है ।

"ए हृदय, तुझे शांति प्राप्त हो, क्योंकि तू अश्रुसागर में

स्नान करते हुए भी शांति की घोषणा करने के लिए तैयार हो जाता है।

"ए होठों, तुम्हें शान्ति मिले, क्योंकि जब तुम कड़वे घूंट पीते हो, तब भी तुम शांति का ही नाम लेते हो।"

७. मेरे हृदय, चुप रह

ए मेरे हृदय, चुप रह। अंतरिक्ष तेरी बात नहीं सुनता।

खामोश रह, मेरे हृदय, शोक और विलाप से व्याकुल यह लोक तेरे गीतों को सहन नहीं कर सकेगा।

ए मेरे हृदय, चुप रह। रात की परछाइयां तेरे भेदों की धीमी-धीमी आवाज को नहीं सुन सकतीं और अंधकार का जलूस तेरे स्वप्नों के सामने नहीं रुकेगा।

चुप रह, ए हृदय, पौ फटने तक चुप रह, क्योंकि जो धीरज के साथ प्रभात की प्रतीक्षा करता है, वह उसका शक्ति के साथ स्वागत कर सकेगा। और जो प्रकाश से प्रेम करता है, प्रकाश उसे प्रेम करेगा।

ए मेरे हृदय, चुप रह और मेरी बात सुन!

मैंने स्वप्न में एक श्याम पक्षी को धधकते हुए ज्वालामुखी के मुहाने पर चहचहाते हुए सुना और एक कुमुदिनी को हिम से ऊपर सिर उठाये देखा।

मैंने एक नग्न अप्सरा को कब्रों के बीच नाचते हुए देखा और एक बालक को खोपड़ियों से खेलते हुए आनन्द-मग्न पाया।

यह सबकुछ मैंने स्वप्न में देखा।

जब मैं जागा और अपने आस-पास देखा तो मैंने ज्वालामुखी को अपने तीव्र कोप का प्रदर्शन करते हुए पाया, पर

श्याम पक्षी को गाते हुए मैं नहीं सुन सका ।

मैंने आकाश को पर्वतों और घाटियों पर हिम-पात करते देखा, जिससे मौन कुमुदिनियां श्वेत आंचल में ढंक गई ।

मैंने कब्रों की पक्तियां देखीं, जो युगों की निस्तब्धता के सामने खड़ी थीं, पर मैंने किसीको उनके सामने नाचते या प्रार्थना करते नहीं पाया ।

फिर मैंने खोपड़ियों के ढेर-के-ढेर देखे, पर इनमें पवनों के अट्टहास के सिवा और किसीकी हँसी न थी ।

जब मैं जागा तो मुझे शोक और संताप के सिवा और कुछ न दिखाई दिया ।

तो फिर स्वप्नों के सब हर्ष और आनन्द कहां चले गये ?

हमारी नींद कहां छिपी है और इसकी प्रतिच्छाया कहां लोप हो गई है ?

जबतक इन्सान की आकांक्षाएं और उमंगें उसके स्वप्नों में लौट नहीं आतीं, उसकी आत्मा कैसे धैर्य से सहन कर सकती है !

... ...

ए मेरे हृदय, चुप रह और मेरी बातों को ध्यान से सुन ।

अभी कल की बात है कि मेरी आत्मा एक पुराना और सुदृढ़ वृक्ष थी, जिसकी शाखाएं गगन-चुम्बी थीं और जड़ें धरती की गहराइयों तक चली गई थीं । उनपर वसन्त ऋतु में फूल खिलते थे और शीत-काल में फल लगते थे ।

जब हेमन्त आया, मैंने उन फलों को चांदी के थालों में

इकट्ठा किया और उन्हें चौराहे पर रख दिया। बटोही उनके पास आये और उन्होंने फल उठाकर खाये और चलते बने।

जब पतझड़ की ऋतु बीत गई और उसका राग-रंग विलाप में बदल गया तो मैंने थालों पर दृष्टि डाली और देखा कि लोगों ने वहां केवल एक फल छोड़ा है।

जब मैंने उस फल को चखा तो मैंने उसे एलवा के समान कड़ुवा और कच्चे अंगूर की तरह खट्टा पाया।

• तब मैंने अपने-आपसे कहा, "मुझे धिक्कार है, क्योंकि मैंने लोगों के होठों पर अभिशाप और उनके उदर में द्वेष-भाव पैदा कर दिया है। मेरी आत्मा, तूने उस मिठास का क्या किया, जो कि तेरी जड़ों ने पृथ्वी के वक्षःस्थल से चूसी थी, और उस सुगन्ध का क्या हुआ, जिसे तेरी टहनियों ने सूरज की किरणों से प्राप्त किया था।"

इसपर मैंने अपनी आत्मा का पुराना और सुदृढ़ वृक्ष जड़ से उखाड़ दिया।

मैंने उसे उसके भूतकाल से पृथक कर दिखाया और सहस्रों वसंतों और हेमंतों की यादों से वंचित कर दिया।

फिर मैंने अपनी आत्मा का वृक्ष दूसरे स्थान पर लगा दिया। अबकी बार मैंने इसे समय की सड़कों से दूर एक खेत में रोपा। उसके निकट मैंने रात भर जागरण किया और उसे मैंने अपने आंसुओं और रक्त से सींचा और कहा, "रक्त

में भी एक सुगन्धि है और आंसुओं में माधुर्य है।"

जब वसंत ऋतु आई तो मेरी आत्मा का वृक्ष फिर फूल उठा और गर्मी में उसपर फल लग आये। फिर जब हेमन्त ऋतु आई, मैंने एक बार पुनः उन फलों को इकट्ठा करके सुनहरी थालों में रक्खा और चौराहे पर रख दिया। लोग पास से गुजर गये, पर किसीने फलों को हाथ न लगाया।

मैंने एक फल उठाकर खाया तो मुझे वह मधु के समान मीठा, अमृत के समान स्वादिष्ट, चमेली के समान सुगन्धित और बेबिलोन की शराब के समान मादक लगा।

और मैंने चिल्लाकर कहा, "लोग अपने अधरों पर धन्यता और अपने उदरों में सत्य नहीं चाहते, क्योंकि धन्यता आंसुओं की पुत्री है और सत्य पीड़ा का पुत्र।"

तब मैं वापस लौटा और अपनी आत्मा के अकेले वृक्ष की छाया में, अपने खेत में, समय की सड़कों से दूर बैठ गया।

... ...

मेरे हृदय, चुप रह। अरुणोदय तक चुप रह।

अंतरिक्ष मृत शरीरों की सड़ांध और दुर्गन्ध से भरा हुआ है और वह जीवित श्वास को स्वीकार नहीं कर सकता।

ए मेरे हृदय, चुप रह और मेरी बात सुन।

अभी कल की बात है, मेरी कल्पना एक जहाज़ के समान समुद्र की लहरों पर तैर रही थी और पवनों के साथ एक तट

से दूसरे तट पर जा रही थी। मेरी कल्पना के जहाज में सात शीशियों के सिवा और कुछ न था, जो इन्द्रधनुष के सात रंगों से लबालब भरी थीं। एक समय आया कि मैं जब समुद्र में यात्रा करते-करते उकता गया तो मैंने कहा, "मैं अपनी कल्पना के जहाज को खाली लेकर जहां मैं पैदा हुआ था, उस नगर के बन्दरगाह में लौट जाऊंगा।"

जब मैं लौट रहा था, मैंने अपने जहाज को अंदर सात रंगों से रंगना आरम्भ किया। मेरा जहाज सायंकाल के पीलेपन की तरह पीला, आकाश के समान नीला और तरबूज़ के समान लाल बन गया।

मैंने अपने जहाज के पालों और पतवारों पर ऐसे चित्र बनाये, जो आंखों को आनन्द दें और हृदय को मुग्ध करें।

जब यह काम पूरा हो गया तो मेरी कल्पना का जहाज एक अवतार के स्वप्न के समान मालूम हुआ, जो दो अनन्त स्थानों—समुद्र और आकाश—के बीच तैर रहा था।

और जब मेरा जहाज वापस बन्दरगाह में पहुंचा तो सब लोग मुझसे मिलने आये।

उन्होंने प्रसन्नता और अभिवादनों से मेरा स्वागत किया और तंबूरे तथा बांसुरियां बजाते हुए बड़े आदर से मुझे नगर में ले गये।

मेरा जहाज उनको मनमोहक मालूम हुआ, इसीलिए उन्होंने यह सबकुछ किया। पर न तो कोई आदमी मेरी कल्पना के उस जहाज़ में सवार हुआ और न किसीने यह

देखा कि मेरा जहाज बन्दरगाह में खाली आया है।

तब मैंने अपने.आपसे कहा, "मैंने लोगों को भ्रम में डाला है और रंग की सात शीशियों से इनकी भीतरी और बाहरी दृष्टि को धोखा दिया है।"

एक वर्ष बीत गया। मैं फिर अपनी कल्पना के जहाज पर सवार हुआ और समुद्र में चल पड़ा।

मैं पूर्व के द्वीपों में गया और वहां से मैंने अगर, लोबान और चंदन आदि इकट्ठे किये और उन्हें अपने जहाज में लाद लिया।

फिर मैं दक्षिणी द्वीपों की ओर गया और वहां से स्वर्ण, हीरे, पन्ने, रत्न-जवाहरात जहाज में भरे।

मैं उत्तरी द्वीपों की ओर भी गया और वहां से दुर्लभ रेशमी और मखमली वस्त्र और हर प्रकार के फीते और झालरें लीं।

वहां से पश्चिमी द्वीपों को गया, जहां मैंने जिरहबख्तर, भाले, तलवारें और अनेक प्रकार के शस्त्रास्त्र इकट्ठे किये।

इस प्रकार मैंने अपनी कल्पना के जहाज को संसार के मूल्यवान और विभिन्न पदार्थों से भर लिया और अपने देश को वापस लौटा। मैंने अपने मन में कहा, "अब मेरे देशवासी एक प्रशंसनीय व्यक्ति के समान मेरी आवभगत करेंगे और शहनाइयों के साथ बाजार में मेरा जलूस निकालेंगे।"

पर यह क्या! जब मैं अपने देश के बन्दरगाह में पहुंचा, तो कोई भी मुझसे मिलने और मेरी अगवानी करने नहीं

आया। मैंने अकेले ही अपने शहर में प्रवेश किया, पर किसी-ने मेरी ओर आख उठाकर भी न देखा।

बाजार के चौकों में खड़े होकर ऊंची आवाज़ में मैने यह भी कहा कि मैं संसार की सुन्दर और अमूल्य वस्तुएं लाया हूं, पर लोग अपने उपहासपूर्ण चेहरों से तिरस्कार के साथ मुझे देखते रहे और वहां से चले गये।

इस प्रकार मैं दुःखी और उदास हुआ और बन्दरगाह को लौट आया।

• ज्योंही मेरी दृष्टि अपने जहाज पर पड़ी, मैंने एक ऐसी बात देखी, जिसकी ओर मैंने अपनी सारी यात्रा में, इन पदार्थों को एकत्र करते हुए, कोई ध्यान न दिया था।

इसलिए मैंने अत्यन्त लज्जित होकर कहा, "देखो, समुद्र की लहरों ने मेरे जहाज के सातों रंगों को धो दिया है और अब यह हड्डियों का एक ढांचा-सा मालूम होता है।

"पवनों, तूफ़ानों और सूरज की गरमी ने पालों और पतवारों के सभी सुन्दर और आनन्ददायक चित्रों को मिटा दिया है और अब ये सर्वथा बेरंग और तुच्छ चीथड़े-से मालूम होते हैं।

"यह सच है कि मै संसार-भर की मूल्यवान निधि अपनी पेटी में भरकर समुद्र की लहरों पर तैरते हुए जहाज में अपने देशवासियों के पास लौटा हूं, पर वे मुझसे दूर भागते हैं, क्यों-कि उनकी आंखें बाहरी चमक-दमक और शोभा के अतिरिक्त और कुछ नहीं देखतीं।"

उसी क्षण मैंने अपनी कल्पना के जहाज को छोड़ दिया

और कब्रिस्तान गया। वहां मै श्वेत कब्रों के बीच में बैठ गया और उनके रहस्यों पर विचार करने लगा।

ए मेरे हृदय, चुप होजा। पौ फटने तक चुप रह।

चाहे तूफान तेरे हृदय की गहराइयों की हलकी-हलकी आवाजों का उपहास करे, पर तू चुप रह।

मेरे हृदय, प्रभात तक चुप रह।

जो आदमी धीरज के साथ प्रभात की प्रतीक्षा करता है, प्रभात उसीका कोमल हृदय के साथ आलिंगन करता है।

ए मेरे हृदय, देख, प्रभात हो गया है। यदि तुझमें तनिक भी बोलने की शक्ति शेष है तो बोल।

... ...

ए मेरे हृदय, प्रभात का जलूस देख।

क्या रात की निस्तब्धता ने तेरे हृदय की गहराइयों में ऐसा संगीत पैदा नहीं किया, जिससे तू प्रभात का स्वागत करे ?

घाटियों पर कपोतों और श्याम पक्षियों की उड़ान को देख।

क्या रात के आतंक ने तेरे पंखों में इतनी शक्ति पैदा नहीं की कि तू भी उनके साथ उड़ सके ?

अपने पशुओं को बाड़े की ओर ले जाते हुए गडरियों को देख।

क्या रात की परछांइयों ने तेरी इच्छाओं में यह प्रेरणा

पैदा नहीं की कि तू भी हरे-भरे खेतों की ओर जाय ?

देख, नवयुवक और नवयुवतियां अंगूरों के बगीचों की ओर तेजी से जा रहे हैं।

क्या तू उठकर उनके साथ नहीं जायगा ?

ए मेरे हृदय, उठ। उठ और प्रभात के साथ चल।

रात समाप्त हो गई है और रात के भय अपने अशुभ स्वप्नों के साथ विदा हो चुके हैं।

ए मेरे हृदय, उठ और अपने स्वर को पंचम में उठाकर गा, क्योंकि जो आदमी प्रभात का गीतों के साथ स्वागत नहीं करता, वह अंधकार की सन्तान है।

८. रात

ए रात, तू कवियों, प्रेमियों और गायकों के विश्राम का समय है।

ए रात, तुझमें परछाइयां आत्माओं और स्वप्नों के साथ निवास करती हैं।

ए रात, तू हमारी इच्छाओं, कामनाओं और स्मृतियों को अपने आंचल में छिपा लेती है।

ए रात, तू ऐसे महाकाय देव के समान है, जो सायंकाल के छोटे-छोटे बादलों और प्रभात की वधुओं के बीच भय और आतंक की तलवार लटकाये, चन्द्रमा का मुकुट और मौन का परिधान पहने, खड़ा है और जो सहस्रों आंखों से जीवन की गहराइयों को देखता है और सहस्रों कानों से विनाश और मृत्यु की आहों और सिसकियों को सुनता है।

... ...

यह तेरा ही अन्धकार है, जो हमपर स्वर्ग के प्रकाश को प्रकट करता है, क्योंकि दिन के प्रकाश ने हमें धरती के अन्धकार से घेर रक्खा है।

यह तेरा ही आश्वासन है, जो अनन्त को हमारी दृष्टि के सामने प्रकट करता है, क्योंकि दिन के वृथा अभिमान हमें काल और अन्तरिक्ष के बिस्तर में आंखों के समान जकड़े हुए हैं।

यह तेरा ही शांत मौन है, जो सदा जागरूक, व्याकुल

और बेचैन रहनेवाली आत्माओं के रहस्य को प्रकट करता है, क्योंकि दिन तो एक उपद्रवमय शोर है, जिसमें आत्माएं इच्छाओं और लालसाओं के तीक्ष्ण खुरों के नीचे दबी रहती हैं।

ए रात, तू एक गड़रिया है, जो नींद के बाड़े में निर्धनों के स्वप्नों और बलवानों की आशाओं को इकट्ठा करता है।

ए रात तू एक सिद्धि है, जो अपनी रहस्यमयी अंगुलियों से दीन और हतभागे जनों की पलकें बन्द करती है और उनके हृदयों को एक ऐसे संसार में ले जाती है, जो इस संसार से अधिक कृपालु है।

ए रात, तेरे श्याम आवरण की तहों में प्रेमियों को आश्रय मिलता है और स्वर्ग की ओस से गीले तेरे चरणों में विरह-पीड़ित हृदयों ने अश्रुपात किया है।

खेतों और अंगूरों के उद्यानों की सुगंधि से सुगंधित तेरी हथेलियों में परदेसियों ने अपनी अभिलाषाओं और निराशाओं को रक्खा है।

ए रात, तू प्रेमियों की सखी, एकान्तवासियों की सुख-दात्री और असहायों का आतिथ्य करनेवाली है।

तेरी गहरी छाया में कवियों की कल्पनाएं मचलती हैं, तेरे आंचल में अवतारों के हृदय जाग्रत होते हैं और तेरे ललाट पर चिंता अपनी रेखाएं अंकित करती है, क्योंकि कवि के लिए तू सम्राट्, अवतार के लिए दृष्टि और चिंतक के लिए एक परम मित्र है।

... ...

जब मेरी आत्मा लोगों से उकता गई और मेरी आंखें दिन के चेहरे को देखते-देखते थक गई तो मैं दूरवर्ती खेतों में चला गया, जहां अतीत की छाया निद्रामग्न थी।

वहां मैं एक श्याम और मौन प्राणी के सामने खड़ा रहा, जो अपने सहस्रों पांवों से पर्वतों पर, घाटियों और मैदानों में घूम रहा था।

वहां मैं अंधकार की आंखों को देखता रहा और अदृश्य पंखों की फड़फड़ाहट को सुनता रहा। उस समय मुझे ऐसा अनुभव हुआ कि मैं निराकार वस्त्रों को छू रहा हूं और मैं किसी अदृश्य शांति के भय से कांप उठा।

ए दुःख-उत्पादक, सुन्दर और डरावनी रात, मैंने तुझे आकाश और पृथ्वी के बीच में बादलों का परिधान पहने और कुहर की करधनी बांधे देखा। तू सूरज के प्रकाश पर हँस रही थी और दिन के प्रभुत्व की खिल्ली उड़ा रही थी। मैंने तुझे उन असंख्य दासों पर घृणा प्रकट करते देखा, जो मूर्तियों के सामने रात भर घुटने टेके, निद्राहीन पड़े रहते हैं और उन राजाओं का तिरस्कार करते हुए देखा, जो अपने मख़मली और रेशमी गद्दों में सोये हुए स्वप्न देखते रहते हैं।

मैंने तुझे चोरों की आंखों में आंखें डालकर देखते हुए और सोते हुए बच्चों की रक्षा करते हुए देखा।

मैंने तुझे वेश्याओं की मुस्कराहट पर रोते और प्रेमियों के आंसुओं पर मुस्कराते हुए भी देखा और अपने दांये हाथ मे महान हृदयवाले मनुष्यों को उठाते और क्षुद्र आत्माओं को

अपने पाँव तले रौंदते हुए भी मैंने तुझे देखा।

ए रात, मैंने तुझे देखा और तूने मुझे। तू अपने प्रभावशाली सौन्दर्य में मेरे लिए एक माता के समान थी और मैं अपने स्वप्नों में तेरे लिए बेटे के समान, क्योंकि अस्तित्व के परदे हटा लिये गए थे और सन्देहों के परदे फाड़ दिये गए थे। तूने अपने गुप्त उद्देश्यों को मुझपर प्रकट कर दिया था और मैंने अपनी सभी आशाओं और इच्छाओं को तुझे बता दिया था। तब तेरी प्रभुता एक ऐसा संगीत बन गई, जो फूलों से भी अधिक सुन्दर और धीमा था और मेरे भय पक्षियों के विश्वास से भी अधिक भरोसे में परिणत हो गये।

तूने मुझे उठाया और अपने कंधों पर बिठा लिया और मेरी आंखों को देखने, कानों को सुनने, होठों को बोलने और हृदय को प्रेम करने की शिक्षा दी। तूने अपनी जादूभरी अंगुलियों से मेरी कल्पना को छुआ और मेरे भाव एक संगीतपूर्ण प्रवाहशील नदी के समान प्रवाहित होने लगे और सूखी हुई घास को अपनी धारा में बहाकर ले गये।

तूने अपने होठों से मेरी आत्मा को चुम्बन दिया और वह अग्नि की तरह भड़क उठी और उसकी लपेटों ने समस्त निर्जीव और दम तोड़ती हुई वस्तुएं अपने आलिगन में भर लीं।

... ...

ए रात, मैं बराबर तेरा अनुसरण करता रहा, यहाँतक कि मैं तेरे समान बन गया।

मैं तेरे एक साथी के रूप में चलता रहा, यहां तक कि तेरी कामनाएं मेरी कामनाएं बन गईं।

मैंने तुझे प्रेम किया, यहांतक कि मेरा समस्त अस्तित्व तेरे अस्तित्व का एक छोटा-सा रूप बन गया।

मेरे अंधकार-पूर्ण अंतरंग में भी चमकते हुए तारे हैं, जिन्हें प्रबल इच्छाएं संध्या की वेला में बिखेर देती हैं और सन्देह-संभ्रम प्रभात की किरणों में उन्हें इकट्ठा कर लेते हैं।

और मेरे हृदय में एक चांद भी है, जो कभी गहरे-गहरे काले बादलों से और कभी सर्वव्यापी स्वप्नों के समूह से संघर्ष करता है।

अब मेरी जाग्रत आत्मा में एक ऐसी शांति निवास कर रही है, जो प्रेमियों के रहस्यों और उपासकों की प्रार्थनाओं को प्रकट करती है।

मेरे चेहरे पर रहस्यों के तानों-बानों का ऐसा परदा पड़ा है, जिसे मृत्यु की पीड़ा तार-तार कर देगी, पर जिसे जवानी के गीत फिर से बुन देंगे।

ए रात, मैं तेरे ही समान हूं और यदि इंसान मुझे घमंडी समझते हैं, तो क्या वे अपने-आपकी दिन से उपमा देकर अभिमानी नहीं बनते हैं ?

मैं तेरे ही जैसा हूं, ए रात, और तेरे ही समान मुझ-पर भी ऐसी बहुत-सी बातों का दोष लगाया जाता है, जिनका तनिक भी दोषी मैं नहीं हूं।

मैं अपने सब स्वप्नों, अपनी समस्त आशाओं और अपने

अस्तित्व के कारण तुझ जैसा ही हूं।

मैं तेरे सदृश ही हूं, यद्यपि संध्या अपनी सुनहरी किरणों का मुकुट मुझे नहीं पहनाती।

मैं तेरे जैसा ही हूं, ए रात, यद्यपि ऊषारानी मुझे मोतियों तथा फूलों से सजे हुए राजसी वस्त्र नहीं पहनाती।

मैं तेरी तरह ही हूं, यद्यपि मुझे आकाश-गंगा की कर-धनी प्राप्त नही है।

मैं भी एक विस्तीर्ण और शांत रात हूं, यद्यपि मेरे पांवों में बेड़ियां भी हैं और मै विद्रोही भी हूं।

मेरे अन्धकार का कोई आदि नहीं और न मेरी गह-राइयों का कोई अन्त है।

जब मृत लोगों की आत्माएं आनन्द के प्रकाश में अभि-मान से उठेंगी तो मेरी रात सदृश आत्मा अपने दुःखों के अन्धकार से प्रतिष्ठित होकर इस संसार की ओर उतरेगी।

ओ रात, मैं तेरी तरह हूं और जब मेरा अरुणोदय होगा, तभी मेरा जीवन भी समाप्त होगा।

६. क़ब्रिस्तान में

कल ही की बात है कि मैं शहर के कोलाहल से घबराकर खामोश खेतों की तरफ निकल गया और एक ऐसे ऊंचे पर्वत के पास पहुंच गया, जहां प्रकृति ने अत्यंत उदारता से अपनी देनी बखेर रक्खी थी।

मैं पर्वत पर चढ़ा और मुड़कर नगर को देखा। नगर अपनी समस्त मीनारों और मन्दिरोंसहित उस धुएं के घने बादलों से आच्छादित था, जो शहर की भट्टियों और कारखानों से उठ रहा था।

मैं बैठ गया और आदमियों की कृतियों के बारे में सोचने लगा। मुझे ऐसा अनुभव हुआ कि उनकी यह सारी दौड़-धप निरर्थक और निष्फल है।

मैंने अपना ध्यान मानव-जाति के दौड़-धूप के इन क्षेत्रों से हटा लिया और उन खेतों पर एक दृष्टि डाली, जो ईश्वर की प्रतिष्ठा और तेज के स्थान हैं।

इन खेतों में मुझे एक क़ब्रिस्तान दिखाई दिया। उसमें संगमरमर के सुन्दर शिला-पट्ट लगे थे और के ऊंचे-ऊंचे वृक्ष उगे थे।

मैं जीवित मनुष्यों की बस्ती और क़ब्रिस्तान के बीच बैठा जीवन के अनंत संघर्ष, अनंत कोलाहल, अनंत मौन

और मृत्यु की महान प्रतिष्ठा पर विचार कर रहा था।

मुझे एक ओर आशा और निराशा, प्रेम और घृणा, धनाढ्यता और दरिद्रता तथा विश्वास और अविश्वास दिखाई दिये। दूसरी ओर मैंने उस मिट्टी को देखा, जिसे प्रकृति मिट्टी में मिलाकर रात की गहरी खामोशी में विकासशील और हरी-भरी वस्तुएं पैदा करती है।

जब मैं इस तरह से सोच-विचार कर रहा था, तो एक बहुत बड़ा जनसमूह धीरे-धीरे चलता हुआ मेरी आंखों के सामने आया और मैंने एक ऐसा संगीत सुना, जो हवा में भयानक ध्वनियां भर रहा था।

मेरी आंखों के सामने से बड़े और छोटे इंसानों का जुलूस गुजरा। मनुष्य एक ऐसे आदमी की अरथी का अनुसरण कर रहे थे, जो धनवान और शक्तिशाली था।

लोग जोर-शोर से रोते-चिल्लाते थे और अपने विलाप और रुदन से चारों ओर आकुलता पैदा कर रहे थे। इस तरह वे क़ब्र तक पहुंच गये।

वहां पादरियों ने मृत-पुरुष के लिए प्रार्थनाएं कीं और धूप आदि जलाई। बाजे-वालों ने दुःखजनक ध्वनियों में शोक के गीत गाये।

सुवक्ताओं ने खड़े होकर बढ़े-चढ़े शब्दों में प्रशंसापूर्ण भाषण दिये और कवियों ने शोक और दुःखभरी कविताएं पढ़ीं, यहांतक कि सब थक गये।

फिर जब वह भीड़ लौटकर गई तो मुझे इस स्थान पर एक शानदार शिला दिखाई दी, जिसे बनाने में कलाकारों में परस्पर

होड़ लग गई थी और जिसपर बहुत-सी पुष्पमालाएं और गजरे पड़े थे, जिन्हें कुशल तथा निपुण अंगुलियों ने बनाया था।

फिर वह जुलूस शहर में वापस पहुंच गया, जबकि मैं उन्हें दूर से देखता हुआ गहरे विचारों में मग्न बैठा रहा।

और अब सूर्य धीरे-धीरे पश्चिम में डूब रहा था। चट्टानों और वृक्षों की परछाइयां लम्बी हो रही थी और वे प्रकाश की चादर को उतार रहे थे।

इस समय मैंने आंख उठाकर देखा तो क्या देखता हूं कि दो आदमी अपने कंधों पर साधारण-सी अरथी उठाये हुए ला रहे हैं। उनके पीछे एक स्त्री फटे-पुराने कपड़े पहने चली आ रही थी। उसकी छाती से एक शिशु चिपटा हुआ था और उसके पैरों के पास एक कुत्ता था, जो कभी स्त्री और कभी अरथी की ओर देख रहा था।

इस निर्धन तथा दीन मनुष्य की अरथी के साथ बस इतने ही लोग थे।

स्त्री के खामोश आंसू उसके हृदय के दुःख और शोक को मुखरित कर रहे थे। शिशु इसलिए चिल्ला रहा था कि उसकी मां रो रही थी और वह स्वामिभक्त कुत्ता अपनी मौन वेदना को लिये चल रहा था।

जब ये लोग क़ब्रिस्तान में पहुंचे तो इन्होंने दूर ऐसे अलग कोने में एक गढ़े में इस लाश को दफ़ना दिया, जो संगमरमर की क़ब्रों से बहुत दूर था।

फिर वे खामोशी और उदासी के साथ वापस लौट आये।

कुत्ते की दृष्टि बार-बार अपने स्वामी तथा साथी के अंतिम विश्राम-स्थल की तरफ लौट-लौटकर जाती थी। अंत में वे सब वृक्षों की ओट में आंखों से ओझल हो गये।

यह देखकर पहले मैंने अपनी निगाह जीवित व्यक्तियों के नगर की तरफ उठाई और कहा, "यह सब धनवानों और शक्तिशाली लोगों के लिए है।"

फिर मैंने मृतकों की नगरी की ओर देखते हुए कहा, "और यह भी धनवानों और शक्तिशाली लोगों के लिए है।"

और मैंने चिल्लाकर पूछा, "हे प्रभो, बता, दुर्बल और निर्धन जनों के लिए जगह कहां है?"

यह कहकर मैंने मेघाच्छादित आकाश की ओर दृष्टि उठाकर देखा, जो डूबते हुए महान सूर्य की सुनहरी किरणों से शोभायमान हो रहा था। अब मुझे अपने अंतरंग से यह आवाज़ सनाई दी, "उसका विश्राम-स्थल यहां है, यहां।"

१०. कवि

मैं इस संसार में एक निर्वासित हूं, एक निर्वासित और अकेला, निस्सहाय। मैं अपने अकेलेपन का सताया हुआ हूं। यह अकेलापन मेरे विचारों को एक जादू के अनजान देश को ले जाता है और मेरे स्वप्नों को एक सुदूर अदृष्ट क्षेत्र की परछाइयों से भर देता है।

मैं एक निर्वासित हूं, जो अपने कुटुम्बियों और देशवासियों से दूर है। यदि मैं इसमें से किसीसे मिलूं तो मैं अपने मन में कहूंगा :

"यह कौन है ? मैंने इससे कहां परिचय प्राप्त किया है ? मेरा इसके साथ क्या नाता है और मैं इसके पास क्यों बैठना चाहता हूं ?"

मैं स्वयं अपने-आपसे निर्वासित हूं और यदि मैं अपनी जिह्वा को बोलते सुनूं, तो मेरे कानों को वह आवाज भी अपरिचित-सी मालूम होती है।

कभी-कभी मैं अपने अंतरंग में झांकता हूं और अपनी गुप्त आत्माओं को देखता हूं—एक छिपे हुए अंतरंग को, जो हँसता है और रोता है, साहस करता है और डरता है।

तब मैं अपने अस्तित्व पर स्वयं आश्चर्य करता हूं और मेरी आत्मा अपने-आप पर ही सन्देह करती है। फिर भी

मैं एक निर्वासित ही बना रहता हूं, अनजान, कुहर में खोया हुआ और मौन में घिरा हुआ।

मैं अपने शरीर से पराया हूं और जब मैं दर्पण के सामने खड़ा होता हूं तो आप देखेंगे कि मेरे चेहरे पर कुछ ऐसी बात होती है, जिसकी मेरी आत्मा ने कल्पना नहीं की थी और आंखों में वह चीज़ है, जो मेरे मन की गहराइयों में नहीं थी।

जब मैं शहर के गली-मुहल्लों मे चलता हूं, तो बच्चे मेरा पीछा करते हैं और चिल्लाते हैं :

• "इस अंधे को देखो। अन्धा है। आओ, हम इसे सहारा, लेने के लिए एक लाठी दें।"

और मैं इनके पास से तेज़ी से भाग जाता हूं। यदि मुझे कहीं नवयुवतियों का झुंड मिल जाता है, तो वे मेरा पल्ला पकड़कर यह गीत गाती है :

"यह चट्टान के समान बहरा है। आओ, हम इसके कानों को प्रेम और विषय-वासना के गीतों से भर दें।"

मैं उनके पास से भी भाग जाता हूं।

और जब मैं बाजार में अधेड़ उम्र के लोगों से मिलता हूं, तो वे मेरे आस-पास इकट्ठे होकर चिल्लाते हैं :

"यह कब्र के समान गूंगा है। आओ, इसकी टेढ़ी जिह्वा को सीधा करें।"

और मैं डर के मारे उनके पास से भी भाग जाता हूं।

और यदि मैं बूढ़े पुरुषों के पास से गुजरता हूं, तो वे अपनी कांपती हुई अंगुलियों से मेरी ओर संकेत करते हुए कहते हैं :

"यह पागल है। इसपर भूत-प्रेतों का प्रभाव है और इसकी अक्ल मारी गई है।"

मैं इस संसार में निर्वासित हूं। मैं एक परदेसी-सा ही हूं, क्योंकि मैंने इस भूमि पर पूर्व से पश्चिम तक यात्रा की है, फिर भी मुझे अपनी जन्म-भूमि दिखाई नहीं दी और न कोई मुझे ऐसा मिला, जो मुझे जानता हो या जिसने मेरा नाम सुना हो।

हर प्रातःकाल जब मै उठता हूं तो मैं अपनेको एक अंधेरी गुफा में कैद-सा पाता हूं, जिसमें मुझे ऊपर से सांप डराते हैं और जिसकी दीवारें और फर्श रेंगनेवाले जन्तुओं से भरी पड़ी हैं।

जब मैं बाहर के प्रकाश को खोजता हूं तो मेरी परछाईं मेरे आगे-आगे दौड़ती है। किस ओर ? यह मैं नहीं जानता। वह उस वस्तु को खोजती है, जिसे मैं भी नहीं समझता और यह उन वस्तुओं को पकड़ती है, जिनकी मुझे आवश्यकता ही नहीं।

जब सायंकाल होता है, मैं अपने घर लौटकर कांटों और परों के अपने बिछौने पर लेट जाता हूं तो आनन्द और भय-मिश्रित अद्भुत और नये-नये विचार मेरे मन को लुभाते हैं और इच्छाएं अपने दुःखों और सुखोंसहित मुझे घेर लेती हैं।

जब आधी रात होती है तो बीते हुए युगों की प्रतिच्छायाएं मुझपर पड़ती हैं, भूले-बिसरे परदेशों की आत्माएं मेरे पास आती हैं और मेरी ओर देखती हैं। मैं भी इन्हें ध्यान से देखता हूं और इनसे बातचीत करके पुरानी-पुरानी बातें

पूछता हूं। वे अत्यन्त कृपा और प्रसन्नता के साथ मेरे प्रश्नों का उत्तर देती है।

पर जब मैं उन्हें पकड़कर थामने का प्रयत्न करता हूं तो वे मेरे हाथों में से निकल जाती हैं और इस प्रकार लोप हो जाती हैं मानो वे वायु में चक्कर लगाता हुआ धुआ हों।

मैं इस संसार में निर्वासित हूं। हां, मै निर्वासित ही हूं। यहा कोई भी आदमी मेरी आत्मा की भाषा को नहीं समझता।

• मै उजड़े स्थानों में जाता हूं और नदियों को घाटियों की गहराइयों में पर्वत-शिखरों पर चढ़ते देखता हूं।

मेरी आंखों के सामने नंगे वृक्ष लहलहा उठते है। उनपर फल लगते हैं। उनके पीले मुरझाये हुए पत्ते गिरने लगते हैं और उनके स्थान पर कलियां आती हैं और फूल खिलते है। यह सब काम एक क्षण में होता है।

मेरी आंखों के सामने उनकी टहनियाँ नीचे भूमि पर गिरती हैं और वे काली नागिनें-सी बनकर रेंगने लगती हैं।

मेरे स्वप्न विचित्र और अद्भुत हैं। किसी इंसान ने ऐसे स्वप्न नहीं देखे। मैं पक्षियों को पौ फटने पर पर फड़फड़ाकर चहचहाते और फिर उन्हें बिलबिलाते और चिल्लाते सुनता हूं।

मैं इन पक्षियों को आकाश से नीचे उतरते और लम्बे-लम्बे खुले हुए केशोंवाली नग्न स्त्रियों का रूप धारण किये देखता हूं। वे मुझे प्रेम-रूपी काजल-भरी आंखों की कनखियों से देखती हैं और मधु से मधुर अधरों से मेरी ओर मुस्कराती हैं। वे अपने गोरे-गोरे सुगंधित और मेंहदी से लाल हाथों

को मेरी ओर बढ़ाती है। मेरे देखते-ही-देखते वे कुहर के समान लुप्त हो जाती हैं और आकाश में अपने व्यंग्य-भरे अट्टहासों की प्रतिध्वनि छोड़ जाती है।

मैं इस संसार में एक निर्वासित हूं।

मै एक कवि हूं, जो छंदों में उन बातों को संजोता है, जिन्हें जीवन गद्य के रूप में बखेरता है।

इसलिए मै एक निर्वासित हूं और उस समय तक निर्वासित ही रहूंगा, जबतक कि मौत मुझे ऊपर न उठा ले और मेरे देश में न ले जाय।[1]

[1] इस गद्य-गीत में कवि जिब्रान ने अपना ही परिचय दिया है। इसकी अन्तिम पंक्तियों में कवि ने सच्ची भविष्यवाणी की है, क्योंकि मरने के बाद उनकी लाश को सरकार की ओर से शाही ठाट-बाट के साथ लबनान लाया गया था—अनु०

११. ख्याति

ज्वार-भाटे के उतार के समय मैं समुद्र-तट पर बालू में चलने लगा और मैंने नीचे झुककर बालू पर एक पंक्ति लिख दी। उसमें मैंने अपने मस्तिष्क की कल्पनाओं और अपनी आत्मा की इच्छाओं को अंकित किया।

जब ज्वार चढ़ा तब मै उसी स्थान पर गया और जो कुछ मैंने लिखा था, उसमें से कुछ भी वहां न पाया। केवल उस आदमी की लाठी के चिन्ह देखे, जो आंखें बन्द करके वहां चला था।

१२. मिट्टी

बड़ी शान-शौकत और वैभव के साथ मिट्टी मिट्टी में से जन्म लेती है।

फिर यह मिट्टी बड़े गर्व और अभिमान से मिट्टी के ऊपर चलती-फिरती है।

मिट्टी मिट्टी से राजाओं के लिए राजभवन और धनवानों के लिए ऊची-ऊंची मीनार और सुन्दर-सुन्दर भवन निर्माण करती है।

वह अद्भुत पुराण-कथाओं के ताने-बाने बुनती है, कठोर नियम-कानून बनाती है और जटिल सिद्धान्तों की रचना करती हैं।

... ...

जब यह सबकुछ हो चुकता है तो मिट्टी मिट्टी के श्रम से उकताकर अपने प्रकाश और अंधेरे मे से काली-काली भयानक छायाओं, कोमल-कोमल सूक्ष्म कल्पनाओं और मन-मोहक मधुर-मधुर स्वप्नों की सृष्टि करती है।

फिर मिट्टी की नीद हारी-थकी मिट्टी की बोझिल पलकों को फुसलाती है। तब मिट्टी गहरी और शांत निद्रा में संसार की सब वस्तुओं को अपनी पलकों में बंद कर लेती है।

और मिट्टी मिट्टी को सम्बोधन करके कहती है, "देख, मैं ही तेरा आदि हूं और मै ही तेरा अंत। सदा तेरा आदि और अंत मैं ही रहूंगी—जबतक कि सितारों का अंत न हो जाय और चांद-सूरज जल-बुझकर राख का ढेर न हो जायं।

●